कठपुतली मार्गदर्शिका

मीना नाईक

अनुवाद

राजेंद्र पांडे

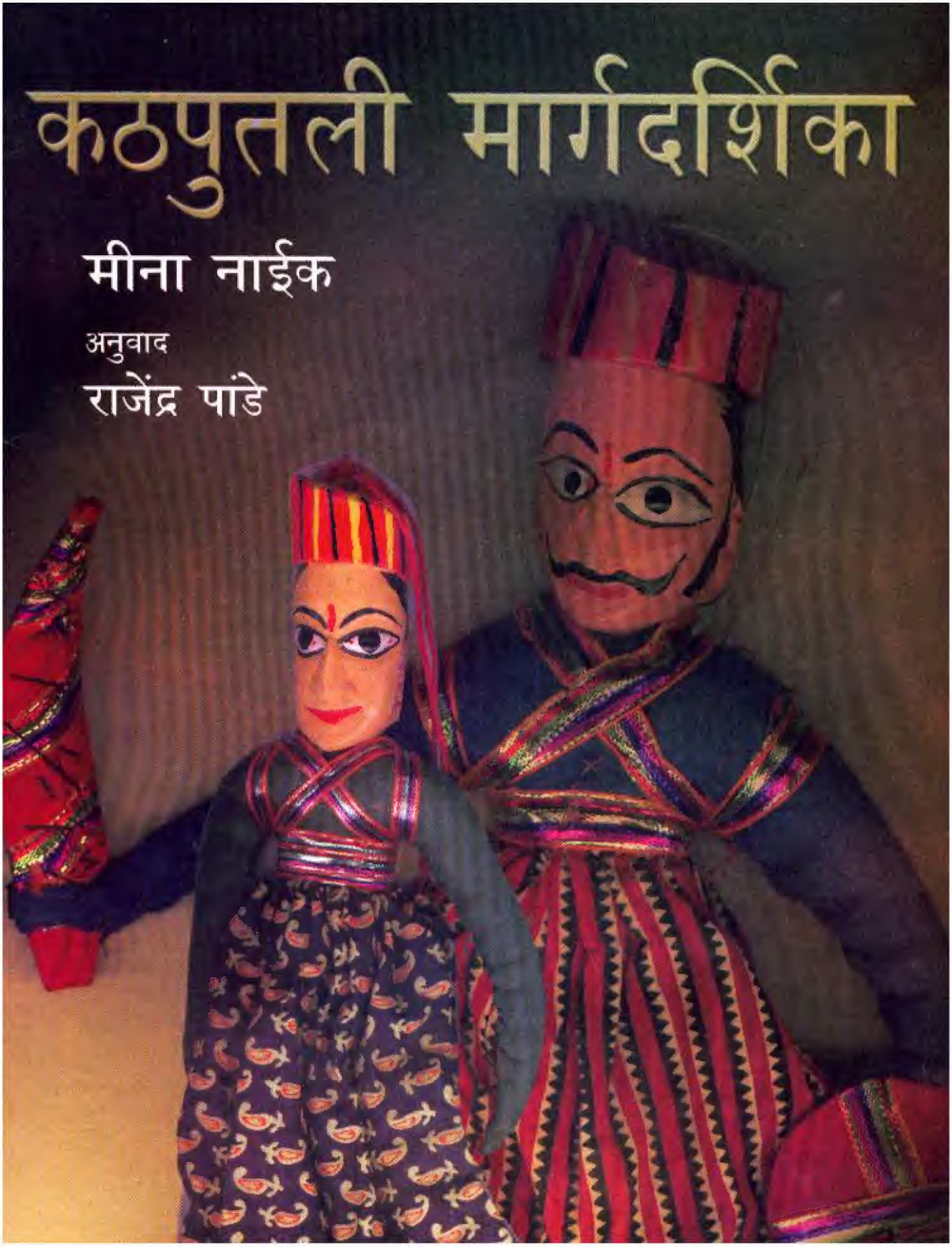

कठपुतली मार्गदर्शिका

मीना नाईक

अनुवाद

राजेंद्र पांडे

रेखाचित्र

सुप्रिया विनोद, दुर्गेश वेल्हाळ

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

समर्पित—

द. ग. गोडसे, विजय तेंदुलकर तथा *अशोक रानाडे* को

जिन्होंने मुझे इस क्षेत्र में पदार्पण करने हेतु प्रेरित किया।

—मीना

विषय-सूची

अपनी ओर से	*सात*
कठपुतली का इतिहास	1
अध्यापन के क्षेत्र में कठपुतली का उपयोग	9
कठपुतली का खेल प्रस्तुत करते समय बरती जाने वाली सावधानियां	*17*
उंगलियों से नचाई जाने वाली कठपुतलियां	21
कागज की थैलियों से बनी बोलती कठपुतलियां	23
सामान्य हाथकठपुतली—खरगोश और कछुआ	25
खाली डिब्बे से बनी मुंह हिलाने वाली कठपुतली	27
लकड़ी के चम्मच से बनी कठपुतली	29
केकड़े का बच्चा	31
स्पंज से बनी छड़ (शलाका) कठपुतली—शेर तथा चूहा	33
छड़ (शलाका) कठपुतली—पहाराजा	35
सूत्र या डोर कठपुतली—विदूषक	37
छाया कठपुतली	39
कठपुतली नाटिका	
चूहे की टोपी	41
गंदा मन्नू	44
भोला पंडित	47
मैं यशोदा जरूर बनूंगी	50

अपनी ओर से

वर्ष 1975 से 1979 के दौरान मुंबई दूरदर्शन केंद्र से मैंने बच्चों का एक कार्यक्रम *'किलबिल'* प्रस्तुत किया। प्रस्तुति के समय मेरे पास एक कठपुतली हुआ करती थी, जिसे मैं *'धिटुकल्या'* कहती। यह कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हुआ। गैर-मराठी दर्शक वर्ग भी इस कार्यक्रम को बड़े चाव से और नियमित देखते। धिटुकल्या और मैं एक-दूसरे से गप्पें हांकते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाते। वास्तव में, यह जानने के बावजूद कि 'धिटुकल्या' एक कठपुतली है, बच्चे स्वयं का रूप उसमें देखते।

इस प्रयास से प्रभावित मुंबई महानगर पालिका के शिक्षा विभाग के भाषा विकास परियोजना निदेशक डॉ. रा. सो. सराफ की ओर से मुझे एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ। उनकी इच्छा थी कि मैं फोर्ड फाउंडेशन द्वारा संचालित 'भाषा विकास परियोजना' के सलाहकार के रूप में जिम्मेदारी स्वीकार करूं। अर्थात, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कठपुतलियों का कैसा उपयोग हो सकता है, इस पर मुझे शोध कार्य कर योगदान देना था। यह मेरे लिए चुनौती थी और मैंने इसे स्वीकार किया।

वर्ष 1976 से 1978 की अवधि में मैंने पहली से चौथी कक्षा के पाठ्यक्रम को लेकर शोध कार्य किया। कुछ कविताओं तथा अध्यायों का नाट्य रूपांतरण किया। तदनुसार कठपुतलियां बनाईं। उस नाटिका की रिकॉर्डिंग की। शिक्षकों के लिए कार्यशालाएं आयोजित कीं। उन्हें आसान कठपुतलियां बनाना सिखाया। इस तैयारी के बाद सन् 1987-88 में मुझ पर खेरवाडी नगरपालिका पाठशाला की तीसरी कक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई। साल भर हर शनिवार को मैं दो घंटे उस कक्षा को पढ़ाती रही। मैंने नाटक विधा पर आधारित कुछ खेलों तथा कठपुतलियों की मदद से, तीसरी कक्षा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर बच्चों को पढ़ाया। साल के अंत में, उस समय की भाषा विकास परियोजना की निदेशिका श्रीमती पन्ना अर्ध्वयू तथा अन्य विशेषज्ञों के ध्यान में यह बात आई कि बच्चों का भाषा को लेकर विकास तो हुआ ही है, उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का भी विकास हुआ है। अतः उन्होंने कुछ शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए मुझे आमंत्रित किया।

इस प्रक्रिया के चलते मैं जान पाई कि किस प्रकार कठपुतलियों का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं, बल्कि कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी किया जा सकता है। आगे चलकर मैंने कई शिक्षकों, समाजसेवकों, परिचारिकाओं, मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सा क्षेत्र के छात्रों, शिक्षा क्षेत्र के लोगों, रंगकर्मियों, गूंगे-बहरे बच्चों आदि प्रशिक्षुओं के लिए हजारों कार्यशालाओं का आयोजन किया। इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं सामाजिक समस्याओं को लेकर जागरूकता बढ़ाने हेतु कमाठीपुरा की वेश्याओं के लिए कार्यशाला, पर्यावरण संबंधी जागरूकता बढ़ाने हेतु बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के शिक्षा अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला, व्यसन के शिकार अभिभावकों के बच्चों में विश्वास पैदा करने हेतु आयोजित कार्यशाला।

कुछ समय पहले 'वाटेवरती काचा ग...' नामक बच्चों के यौन शोषण की समस्या पर आधारित नाटक (मराठी तथा हिंदी में) मैंने मंचित किया। उस नाटक में भी यौन शोषण वाले हिस्से को दर्शकों के सामने प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैंने छाया कठपुतलियों का उपयोग सफलतापूर्वक किया।

पिछले पच्चीस सालों में कठपुतलियों को लेकर ज्ञान प्राप्त करते और उस ज्ञान को बांटते हुए मेरे ध्यान में यह बात आई कि लोगों में इन कठपुतलियों के बारे में एक जिज्ञासा, एक कौतुहल पैदा हुआ है। यानी पच्चीस साल पहले इन कठपुतलियों का मुझे ध्यान नहीं था। वह बात अब नहीं है। फिर भी, कहना होगा कि कठपुतलियों का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए इसकी समझ मुझमें आई नहीं है। कठपुतलियों को बनाने तक तो मन में अदम्य उत्साह बना रहता है, लेकिन उनकी उपयोगिता की समझ कम है, या फिर उस दिशा में लापरवाही बरती जा रही है।

संदर्भ प्राप्त करने हेतु हाथ में एकाध पुस्तक हो तो शायद समझ में बढ़ोतरी हो, ऐसा अनुभव होता है। इस विषय पर मराठी में पुस्तकों की कमी को देखते हुए, स्वयं के अनुभवों को आधार बनाकर यह पुस्तक लिखी गई है।

कठपुतली विधा का विकास हो, यही इच्छा इस पुस्तक की रचना करते समय मेरे मन में रही है।

(मूल मराठी पुस्तक की भूमिका)

5 मार्च 2001

मीना नाईक

कठपुतली का इतिहास

'कठपुतली' का इतिहास बहुत प्राचीन है। *महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, नैषधीय चरित्र, कथासरित्सागर, ज्ञानेश्वरी* आदि अनेक ग्रंथों में कठपुतली संबंधी कला का उल्लेख आता है। *महाभारत* के इस श्लोक पर गौर करें :

परप्रयुक्तः पुरुषो विचेष्टते।
सूत्रप्रोता दासमयीव योषा।

अर्थात, जिस तरह कठपुतली सूत्रधार की इच्छानुसार क्रिया-कलाप करती है, उसी तरह मानव ईश्वर की इच्छानुसार क्रिया-कलाप करता है।

कठपुतली यानी किसी युक्ति के सहारे हलचल करने वाले गुड्डे-गुड़िया-पुतले। इन कठपुतलियों का सूत्र संचालन जिसके जरिए होता है, वह सूत्रधार होता है। नाटक विधा में *सूत्रधार* की संकल्पना बहुत आम है। लेकिन मूलतः उसका आगमन कठपुतली के खेल से हुआ है। विद्वान मानते हैं कि भारतीय नाट्यकला का जन्म भी कठपुतली के खेल से हुआ है। *कठपुतली* तथा *सूत्रधार* को लेकर अनेक बातें हमारे यहां प्रचलित हैं। कठपुतली कला चौंसठ कलाओं में गिनी जाती है। *पंचतंत्र* में *काष्ठचित्रक्रीड़न* शब्द का प्रयोग किया गया है। काष्ठ यानी लकड़ी। क्रीड़न यानी खेल। अर्थात, लकड़ी के चित्रों का खेल। उसी तरह, *यंत्रपुत्रकलीला* का भी उल्लेख है। लीला यानी खेल। श्रीहर्षरचित *नैषधीय चरित्र* में उल्लेख आता है कि राजा नल के दरबार में हमेशा कठपुतली का खेल हुआ करता था। *कथासरित्सागर* में ऐसा जिक्र है कि एक राजकुमारी दूसरी राजकुमारी से भेंट करने जाते समय अपने साथ चार कठपुतलियां लिये जाती हैं। संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम तथा नामदेव ने इन गुड्डे-गुड़ियों-कठपुतलियों के खेल को मराठी में '*साईखड़ा*' का खेल कहा है। छाया कठपुतलियों का खेल तो बहुत प्राचीन है। कहा जाता है कि महाराष्ट्र के पहले मराठी नाटककार स्व. विष्णुदास भावे भी पहले कठपुतलियों का खेल प्रस्तुत किया करते थे। लेकिन देश में एक सुदृढ़ परंपरा होने के बावजूद इस कला का विकास नहीं हो पाया। एक सृजनात्मक व्यवसाय के रूप में भी इस कला को श्रद्धा के साथ नहीं देखा गया। इसके विपरीत, जापान, रूस, चेकोस्लोवाकिया, अमेरिका, जर्मनी, इटली, स्विट्जरलैंड, इंग्लैंड आदि देशों में विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से इस कला को ऊंचाइयों पर पहुंचाया गया है।

परंपरागत कठपुतलियां

परंपरागत कठपुतलियों के मुख्य रूप से चार प्रकार हैं :

1. हाथ या हस्त कठपुतली (Glove Puppets, Hand Puppets)
2. छड़ या शलाका कठपुतली (Rod Puppets)
3. सूत्र या डोर कठपुतली (String Puppets, Marionettes)
4. छाया कठपुतली (Shadow Puppets, Leather Puppets)

1. हाथ या हस्त कठपुतली

हमारे देश में केरल राज्य में मुख्यतः हाथ कठपुतलियों का उपयोग होता है। मनोरंजन के साथ-साथ कुछ धार्मिक विधि-विधान हेतु भी कठपुतलियां उपयोग में लाई जाती हैं। जिस तरह हाथ में दस्ताने चढ़ाए जाते हैं, उसी तरह कथकली की कठपुतलियां हाथ के पंजे में पहन होमकुंड के इर्द-गिर्द बैठा व्यक्ति उन्हें नचाता है। इन्हें *पावकुथु* या *पावकली* कहा जाता है। *पाव* माने कठपुतली और *कुथु* यानी नाच या खेल। बंगाल में *बेनी पुतुल* नाम से प्रचलित कठपुतलियों के खेल को घुमक्कड़ कठपुतलीकार प्रस्तुत करते हैं। दो कठपुतलियों की चोटियों को इकट्ठे

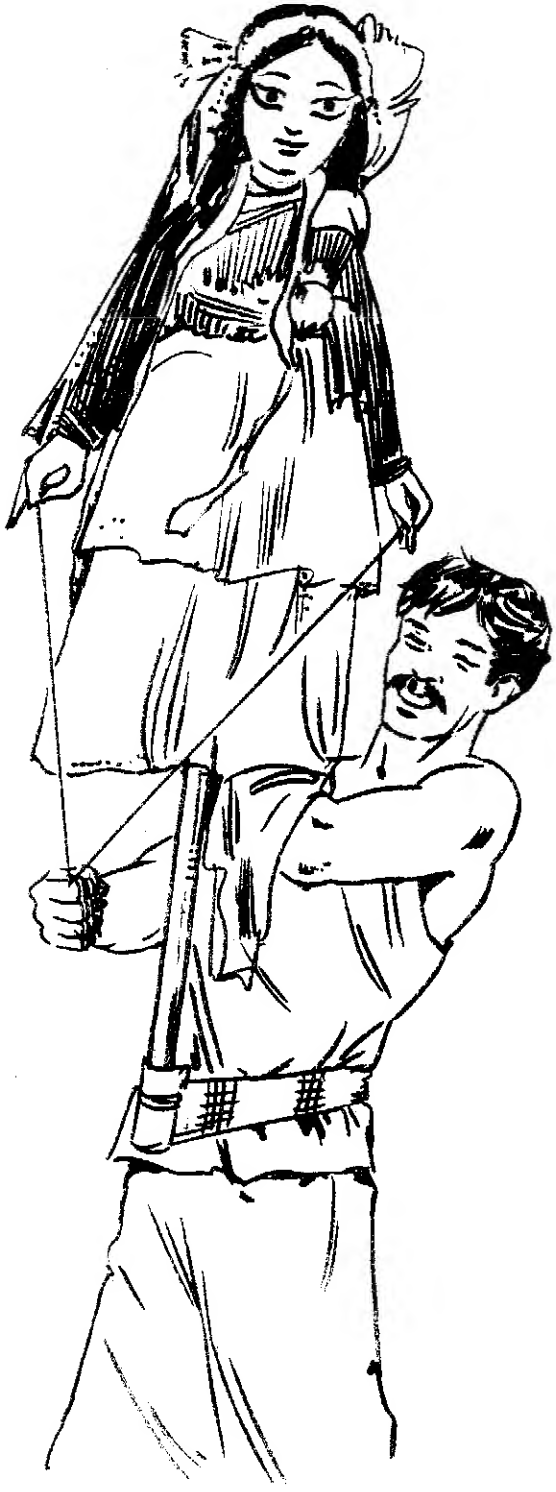

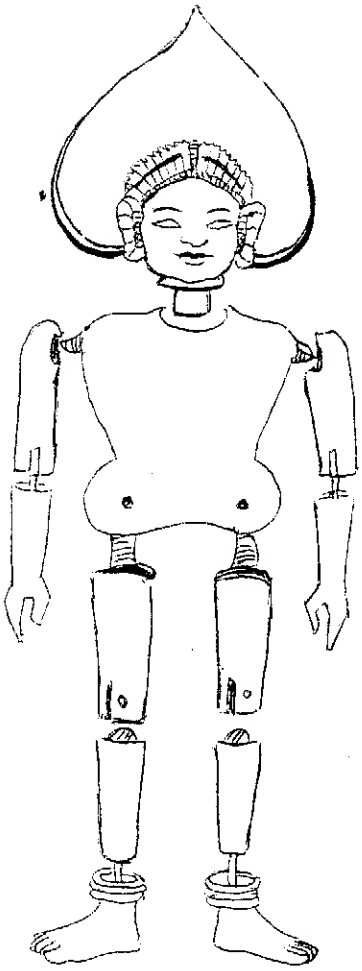

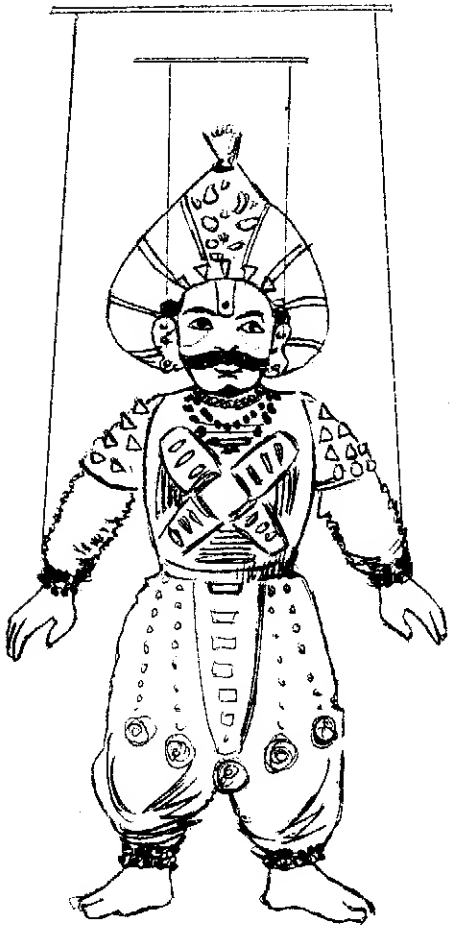

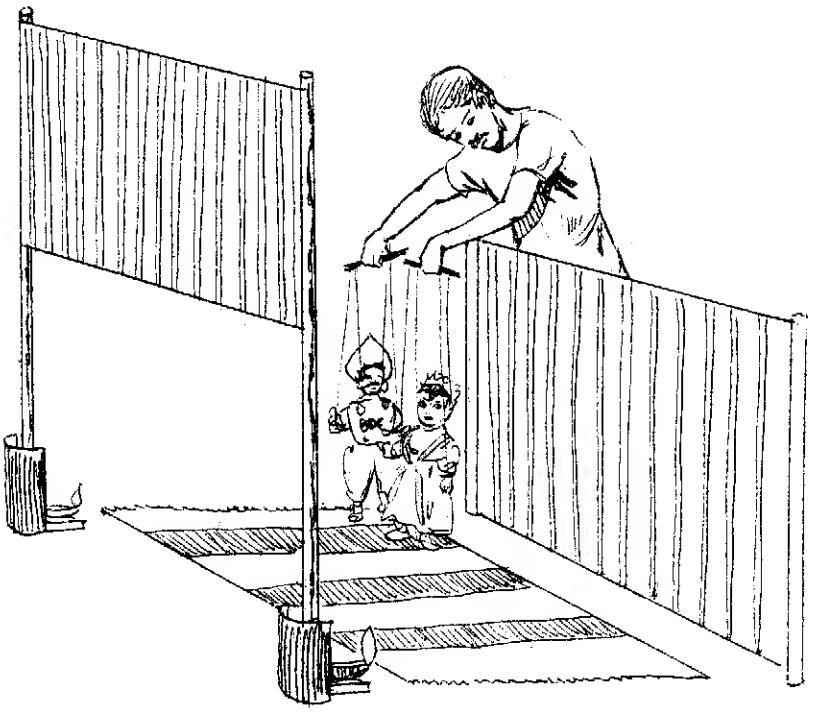

बांधकर और उन्हें कंधे पर डालकर ये कठपुतलीकार एक गांव से दूसरे गांव खेल करते हुए घूमते हैं। उड़ीसा में भी परंपरागत हाथ/हस्त कठपुतलियों का प्रचलन है। वहां इसे *कुंधेही नाचा* नाम से संबोधित किया जाता है। *कुंधेही* यानी कठपुतली। *नाचा* यानी नाच या खेल/खेला। इस खेल में कृष्ण तथा राधा, बस दो ही कठपुतलियां होती हैं। इन कठपुतलियों को नचाते समय सूत्रधार के परदे के पीछे छुपे रहने की परंपरा नहीं है। महाराष्ट्र के कुडाल के नजदीक बसे पिंगुली गांव में भी रामायण की कथाएं प्रस्तुत करते समय कठपुतलियों का प्रयोग किया जाता है।

2. छड़ या शलाका कठपुतली

बंगाल में विशेषतः इन कठपुतलियों का प्रचलन है। परंपरागत तथा आधुनिक कठपुतलीकार छड़/शलाका कठपुतलियों का बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं। कई बार इन कठपुतलियों की लंबाई 4 से 5 फुट तक होती है। कठपुतली के चेहरे से सटी छड़ हाथ में पकड़ कर कठपुतली नचाई जाती है। ऐसी कठपुतलियों को नचाने हेतु कभी-कभी एक से अधिक सूत्रधार जरूरी होते हैं। कमर के इर्द-गिर्द कपड़ा/पट्टा लपेटा जाता है; उसमें कठपुतली की छड़ फंसाकर कठपुतलीकार छड़ के जरिए कठपुतली के हाथों को गति देता है। बांग्ला भाषा में इसे *पुतुलनाच* या *पुतुलखेला* कहा जाता है। उड़ीसा के छड़/शलाका कठपुतली खेल को *काठी कुंधेही* कहा जाता है। ये छड़/शलाका कठपुतलियां 12 से 18 इंच लंबी होती हैं। बंगाल के पुतुलनाच में जहां सूत्रधार खड़ा रहकर सूत्र संचालन करता है, वहीं काठी कुंधेही में बैठकर।

कर्नाटक में छड़ या तार तथा डोर इन दोनों की मदद से कठपुतली का खेल प्रस्तुत करने का एक तरीका है। इस तरीके में सूत्र कठपुतली की तरह ऊपर से कठपुतली नचाई जाती है। सूत्रधार के सिर पर एक रिंग होती है। इस रिंग से कठपुतली के दो कानों से बंधी दो डोर जुड़ी होती है। सूत्रधार जैसे-जैसे अपनी गर्दन हिलाता है, तदनुसार कठपुतली की गर्दन की भी हलचल होने लगती है। कठपुतली के दोनों हाथों से दो मोटे तार या छड़ बंधी होती है। इन्हें सूत्रधार अपने हाथ में पकड़े रखकर कठपुतली के हाथों को गति देता है। ये कठपुतलियां बहुत वजनदार होती हैं। इनके पैर नहीं होते। महाराष्ट्र में गणेशोत्सव के दौरान जिस गौरी की स्थापना की जाती है, उसी गौरी के समान इन कठपुतलियों का रंग-रूप होता है। इन कठपुतलियों को नचाते समय स्वयं सूत्रधार अपने पैरों में घुंघरू बांध नाचता रहता है। इन्हें *गोम्बे आटा* कहते हैं। *गोम्बे* का मतलब कठपुतली तथा *आटा* यानी नाच या खेल/खेला।

3. सूत्र या डोर कठपुतली

डोर के सहारे नचाई जाने वाली राजस्थानी कठपुतलियां विश्व-प्रसिद्ध हैं। कई बार इन कठपुतलियों के पैर नहीं होते। ये कठपुतलियां हाथ की उंगलियों पर लिपटी डोर के माध्यम से ऊपर से नचाई जाती हैं। कठपुतलियों के चेहरे लकड़ी से बने होते हैं, जबकि शेष शरीर कपड़े से बना होता है। कमर के नीचे विस्तृत घेरे का लहंगा पहनाया जाता है। मुंह से निकली संगीतमय ध्वनि तथा ढोलक की ताल पर ये कठपुतलियां नाचती हैं। अमर सिंह राठौड़, पृथ्वीराज चौहान आदि ऐतिहासिक कथाओं को आधार बनाकर कठपुतलियों का खेल प्रस्तुत किया जाता है।

कर्नाटक के कुंदापुर निवासी कोग्गा कामथ ऐसे एकमात्र कठपुतलीकार हैं जो सूत्र कठपुतलियों के माध्यम से *यक्षगान* प्रस्तुत करते हैं। उनकी सूत्र/डोर कठपुतलियां लकड़ी से बनी होती हैं। उनके पैर भी होते हैं। ठेठ यक्षगान के पात्रों की तरह उनकी वेशभूषा, साज-शृंगार तथा मंच-सज्जा होती है। डेढ़ से दो फुट ऊंचाई की इन कठपुतलियों से कम से कम 4 और अधिक से अधिक 8-10 डोर बंधे होते हैं। इनकी हलचल भी यक्षगान की शैली में तालबद्ध होती है।

महाराष्ट्र के पिंगुली गांव में कठपुतलियों का खेल प्रस्तुत करनेवाला एक परंपरागत दल है। यह दल

रामायण-महाभारत की कथाओं को प्रस्तुत करता है। इनके पास मौजूद सूत्र/डोर कठपुतलियां राजस्थानी कठपुतलियों से काफी मिलती-जुलती हैं।

4. छाया कठपुतली

भारत की कठपुतलियों का यह प्राचीन प्रकार है। इन कठपुतलियों को *चमड़े की कठपुतली* भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इन्हें बकरी या हिरन की चमड़ी से बनाया जाता है। दक्षिण भारत तथा उड़ीसा में छाया कठपुतली का खेल प्रस्तुत करनेवाले परंपरागत कठपुतलीकार अभी भी मौजूद हैं।

आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल तथा उड़ीसा में इन कठपुतलियों के निर्माण का तरीका कमोबेश समान ही है। आंध्र प्रदेश की कठपुतलियां चार से पांच फुट लंबी होती हैं, वहीं महाराष्ट्र की कठपुतलियां नौ इंच लंबी। इन्हें बनाने हेतु बकरी की गीली खाल से बाल साफ किए जाते हैं और उस खाल को अच्छी तरह खींचकर सुखाया जाता है। उस पर जरूरत के मुताबिक विभिन्न आकार की रूपरेखा खींच ली जाती है। कठपुतली की हलचल को ध्यान में रखते हुए शरीर के जोड़ों को अलग से काट लिया जाता है। उन्हें एक-दूसरे के साथ डोर से बांध दिया जाता है। उनमें छेद कर उन्हें गहनों, कपड़ों आदि से सजाया जाता है। फिर उन्हें सब्जियों, वनस्पतियों से निकले प्राकृतिक रंगों से रंग दिया जाता है। लेकिन उड़ीसा तथा केरल में कठपुतलियों को रंगा नहीं जाता। इन कठपुतलियों को सफेद परदे के पीछे नचाया जाता है। पीछे से आ रहे प्रकाश के कारण इन

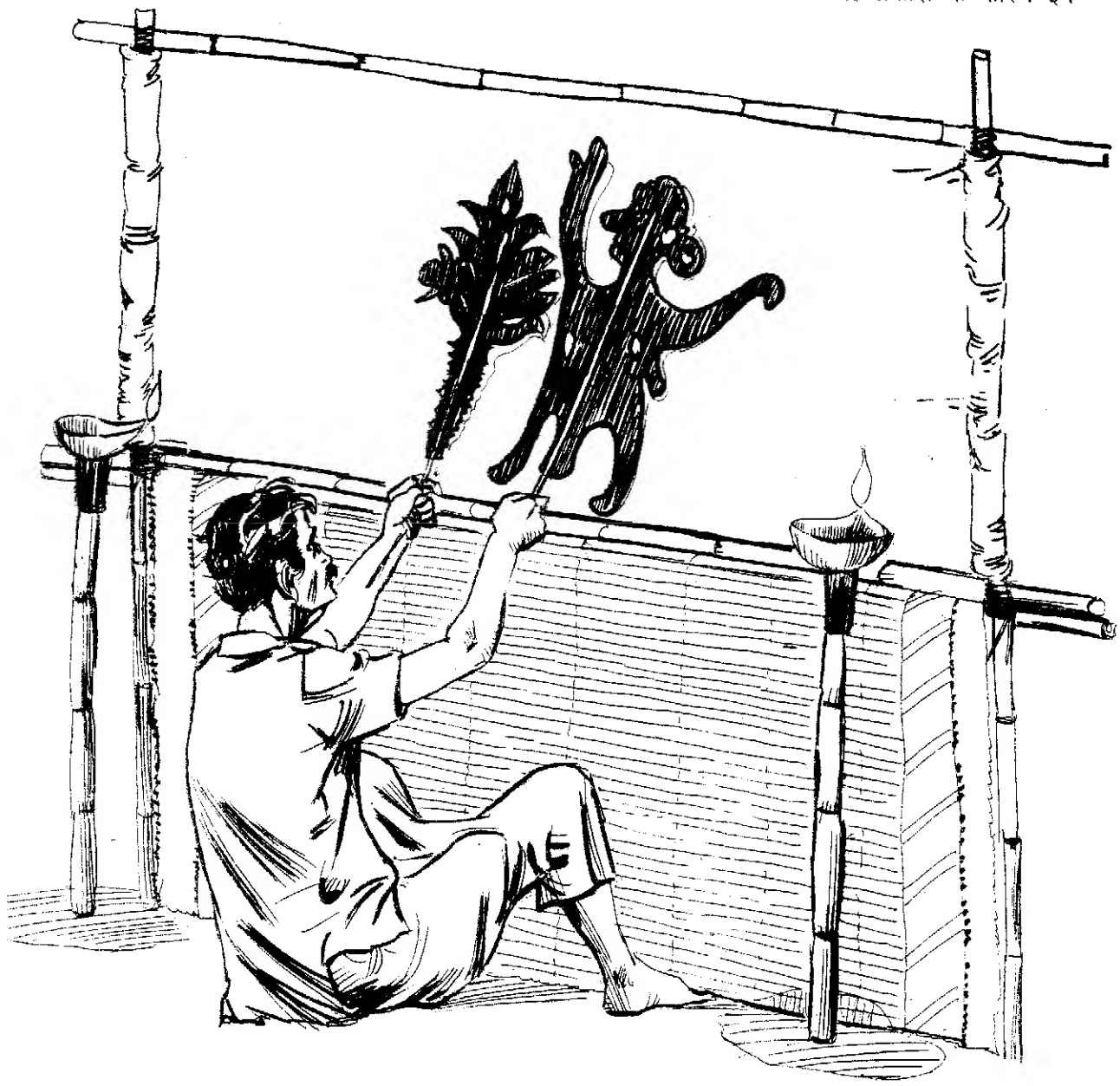

कठपुतलियों की छाया परदे पर दिखाई देती है। दर्शक साक्षात् कठपुतलियां नहीं, बल्कि सफेद परदे पर उनकी छाया देखते हैं, इसीलिए इन्हें *छाया कठपुतलियां* कहा जाता है।

कर्नाटक, उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि राज्यों की कठपुतलियों में बहुत हलचल या गति नहीं देखी जाती, बल्कि एक संपूर्ण कठपुतली मानो एक चित्र के समान होती है। इस चित्र के बीचोंबीच बेंत फंसा दी जाती है। इसी बेंत या लकड़ी के सहारे संपूर्ण चित्र को हिलाया-डुलाया जाता है। आंध्र प्रदेश की कठपुतलियों में पर्याप्त मात्रा में हलचल दिखाई देती है। हलचल हेतु कठपुतली के मध्य भाग में एक, प्रत्येक हाथों के पंजों में एक-एक, तो कभी-कभी गर्दन में एक छड़ फंसाई जाती है। कठपुतली का यह खेल रामायण-महाभारत के कथानकों को आधार बनाकर खेला जाता है। इस खेल में नाच-गानों का भी समावेश होता है। वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। संवाद शैली काव्यात्मक होती है। महाराष्ट्र में इन्हें *चमड़े की कठपुतलियां* तो उड़ीसा में *रावणछाया*, कर्नाटक में *थोगालु गोम्बे आटा*, आंध्र प्रदेश में *थोलु बोम्मल आटा* कहा जाता है। *थोलु* यानी चमड़ा। *बोम्मल आटा* यानी कठपुतली का नाच।

इन चार परंपरागत प्रकारों के अलावा कठपुतली का मेरी समझ में एक और महत्वपूर्ण प्रकार है, यह है *सृजनात्मक कठपुतली* (Creative Puppets)। सृजनात्मक कोशिशों से निर्मित कठपुतली किसी भी वस्तु या माध्यम के सहारे बनाई जा सकती है। ऐसी कठपुतली को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। सृजनात्मक कठपुतली के नाच हेतु ऊपर दिए गए किसी भी एक तंत्र का या इकट्ठे दो-तीन तंत्रों का; अथवा इन चारों में से अलग किसी भिन्न तंत्र का सहारा लिया जाता है। इसमें अस्तित्वप्राप्त किसी जड़ वस्तु को विशेष हलचल प्रदान कर जीवित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

आज दुनिया में कठपुतली की संकल्पना इतनी व्यापक रूप धारण कर चुकी है कि किसी भी क्रिया-कलाप, हलचल को दर्शाने वाली वस्तु को 'पपेट' मान लिया जाता है। इनमें छुरी-कैंची-पिन से लेकर छाते, जूते, फलक, दरांती, बिजली का खंभा आदि कई वस्तुएं शामिल हैं। इन्हें क्रिया-कलापों के जरिए जीवंत बनाना केवल सूत्रधार की कुशलता का परिचायक होगा। ऐसा भी नहीं कि सूत्रधार को परंपरानुसार परदे के पीछे ही छिपा रहना चाहिए। वह बाकायदा अपनी कठपुतलियों के साथ दर्शकों के सामने बना रह सकता है। वस्तुतः गतिमान कठपुतलियों में ही इतना आकर्षण होता है कि सूत्रधार की ओर दर्शकों का ध्यान ही नहीं जाता।

मुझे लगता है, आज के युग में इन कठपुतलियों का उपयोग अधिक से अधिक होना चाहिए। किसी समय में इस कला को तथा कठपुतलीकारों को समाज में विशिष्ट स्थान और सम्मान प्राप्त था। लेकिन आज यह कला मानो मर रही है। कारण यह कि यह कला जनसाधारण के बीच पहुंच ही नहीं पाई। इस कला का तंत्र, प्रस्तुतीकरण खास परिवारों तक ही सीमित रहा। मौखिक परंपरा के जरिए इन प्रस्तुतकर्ताओं को जितना कुछ समझ में आया, बस वही रामायण-महाभारत के कथानकों जैसी प्रस्तुतियों में सिमट गया। नए-नए प्रयोग हो ही नहीं पाए। समय के अनुसार विषयों-कथानकों में कोई बदलाव नहीं आया। परिणामस्वरूप आज यह कला खत्म होने के कगार पर है। अतः परंपरागत तंत्र एवं आधुनिक सोच तथा माध्यम को मिलाकर कठपुतलियों का नाटक प्रस्तुत करना चाहिए। प्राचीन काल में जादू-टोना, चमत्कार आदि के लिए गूढ़ विद्या के रूप में इस तंत्र का उपयोग किया जाता था। शायद इस कारण भी यह कला औरों को न सिखाई जाती हो, इसका प्रचार-प्रसार न किया गया हो। लेकिन आज के कंप्यूटर युग में गूढ़ विद्या का कोई मतलब नहीं है। बल्कि इस कला का विज्ञापन, सिनेमा, टेलीविजन, शिक्षा जगत, समाज-सुधार आदि विविध माध्यमों, विधाओं, क्षेत्रों में उपयोग होने लगा है। कठपुतली का नाच केवल बचकानापन या बच्चों का खेल है इस विचार को त्याग गंभीर समस्याओं को लेकर समाज में जागरूकता फैलाने हेतु अब कठपुतलियों का उपयोग हो रहा है। एड्स संबंधी, गोद लेने-देने संबंधी जागरूकता, पर्यावरण, प्राथमिक शिक्षा तथा बच्चों के यौन शोषण जैसे गंभीर सामाजिक समस्याओं को उजागर करने हेतु मैंने स्वयं हाथ कठपुतली, छड़ कठपुतली तथा छाया कठपुतलियों का उपयोग किया है। ये प्रयास अत्यंत सफल भी साबित हुए हैं।

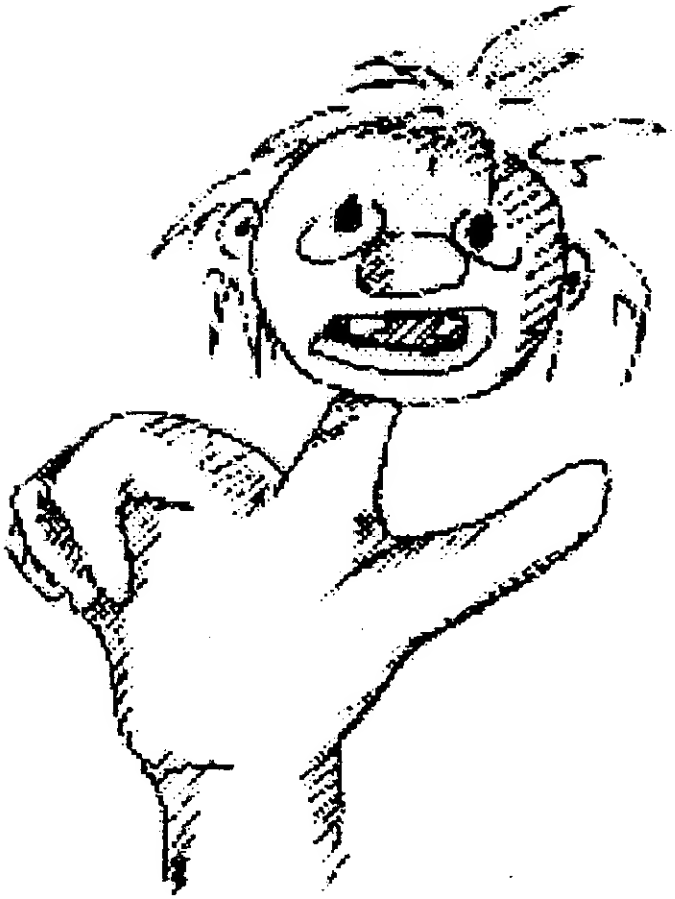

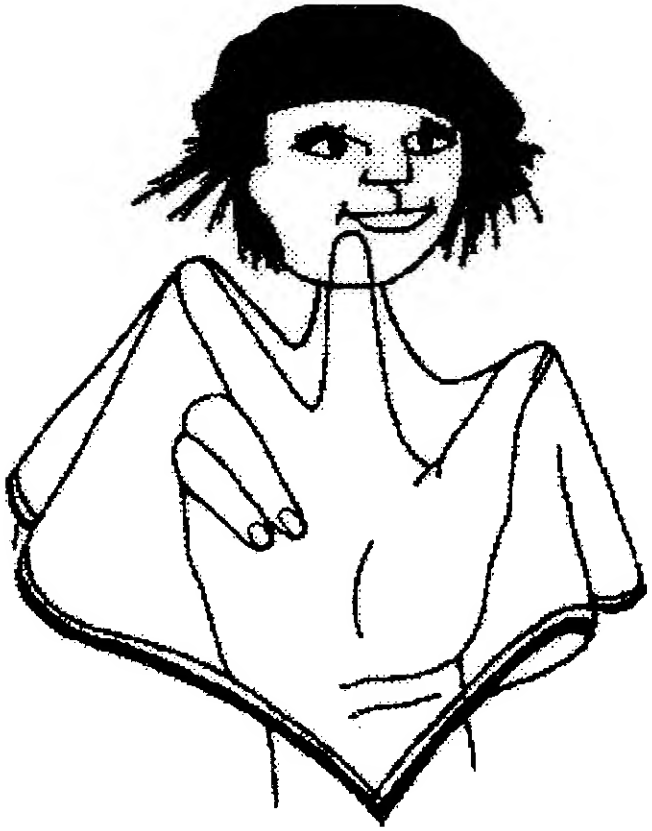

अध्यापन के क्षेत्र में कठपुतली का उपयोग

शिक्षा पद्धति में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। प्राचीन समय में शिक्षा-पद्धति जहां बेहद सहज थी, वहीं समय बीतने के साथ वह औपचारिक होती चली गई। बाद में, एक अलग संदर्भ में वह सहज और औपचारिक दोनों हो गई। और अब औपचारिक शिक्षा, अपने भिन्न ही रूप में, यानी अनौपचारिक तरीके से देने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। शिक्षा संस्थान, शिक्षा प्रबंधन, शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा के साधन तथा शिक्षकों का स्थान एवं उनकी अपेक्षाएं आदि पहलुओं में भी परिवर्तन आ रहा है। आज शिक्षा का महत्त्व मानव के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से स्वीकारा जा रहा है। आज उम्मीद की जाती है कि शिक्षा मनुष्य की स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, बंधुत्व, समानता, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकात्मकता तथा विश्व-नागरिकता आदि विशाल उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन बने। इसके पीछे कोशिश यही है कि शिक्षा जगत से निकला छात्र अपने आपको जीवन की पटरी पर ठीक से बिठा पाए। संक्षेप में, शिक्षाविदों की यह दृढ़ मान्यता है कि शिक्षा 'जीवनदायी' हो, ताकि वह 'आनंददायी' भी सिद्ध हो सके। नए शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा छात्र-केंद्रित, आनंददायक, लचीली, उद्यमपरक तथा सृजनशील हो यही मान्यता है। अतः शिक्षा-कार्य गतिशील, प्रभावशाली, अर्थपूर्ण तथा मनोरंजक हो सके, इस दृष्टिकोण से दैनंदिन अध्यापन कार्य में विविध साधनों का उपयोग होने लगा है। इन साधनों में कठपुतली को भी एक साधन मानकर उसे समाविष्ट करना जरूरी है।

प्राथमिक पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चों की जेब में अक्सर कंचे, मणि, कंकड़-पत्थर, रंगीन कागज, मोरपंख, पत्तियां, कपड़ों के टुकड़े, खाली डिबिया वगैरह चीजें रखी होती हैं। इन चीजों का उपयोग कठपुतली बनाने में हो सकता है। हम केवल पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा नहीं पा रहे हैं, बल्कि कठपुतली के माध्यम से देखने, सुनने, अनुभव करने, सोचने जैसी पूरक क्रियाओं-प्रक्रियाओं से भी गुजर रहे हैं, ऐसी सोच बच्चों की भी बनती जाती है। अतः शिक्षक तथा छात्रों के बीच समरसता का निर्माण होता है। आनंददायक, सृजनशील तथा छत्र-केंद्रित शिक्षा में इनका होना जरूरी है। निष्प्राण, किताबी, लीक से बंधी पढ़ाई की बजाय शिक्षा का यह स्वरूप अधिक चेतनामय, सृजनात्मक तथा आनंददायी सिद्ध होता है।

कठपुतली खेल की मूल भावना मनोरंजन करना है। बस, इसी भावना को ध्यान में रखते हुए छात्रों को पढ़ाना होगा। शिक्षा का उद्देश्य अपेक्षित परिवर्तन लाना है। वास्तव में, छात्रावस्था में छात्रों के जीवन-अनुभव इतने सीमित होते हैं कि शिक्षक शब्दों के माध्यम से कितना ही सुविधाजनक ढंग से पढ़ाए, छात्रों के मन-मस्तिष्क में सही प्रतिमाएं उभरती ही होंगी, ऐसा जरूरी नहीं है। किंतु कठपुतली का उपयोग अनुभव जगत को समृद्ध करने का एक प्रभावशाली तरीका है। इस तरीके से भाषा जीवंत हो जाती है। कठपुतली के खेल में सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना तथा स्वयं करके दिखाना जैसी भाषिक क्रियाओं का समावेश होता है। अतः छात्रों को किताबी शिक्षा के अलावा स्वयं के कार्यानुभवों से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में भी मदद मिलती है। अध्ययन तथा अध्यापन के अलग-अलग तरीके हैं। इनमें विविध क्रियाओं-प्रकियाओं को अपनाया जाता है; मसलन, शोध, सोचना, जांचना, निरीक्षण, स्पर्श कर जांचना, अनुमान लगाना, तुलना करना, अपनी पसंद दर्शाना, अपनी नापसंदगी का कारण स्पष्ट करना, एक-दूसरे से विचार-विमर्श, पड़ोसी से सलाह-मशविरा, देखकर बात समझना, अपना काम स्वयं करना, काम न होने की स्थिति में उस दिशा में कोशिश करना आदि। कठपुतली का खेल इसी सिद्धांत पर आधारित है। मेरी बात और स्पष्ट हो पाए, इसलिए हम कठपुतली के खेल को सीढ़ी-दर-सीढ़ी समझेंगे।

कठपुतली के खेल में पहला कदम कठपुतली बनाना होता है। कुछ नया-नया बनाते रहना बच्चों को स्वभावतः अच्छा लगता है। रेत का महल, कागज की नाव, चमकीली पन्नी की गुड़िया, रूमाल से बना चूहा आदि

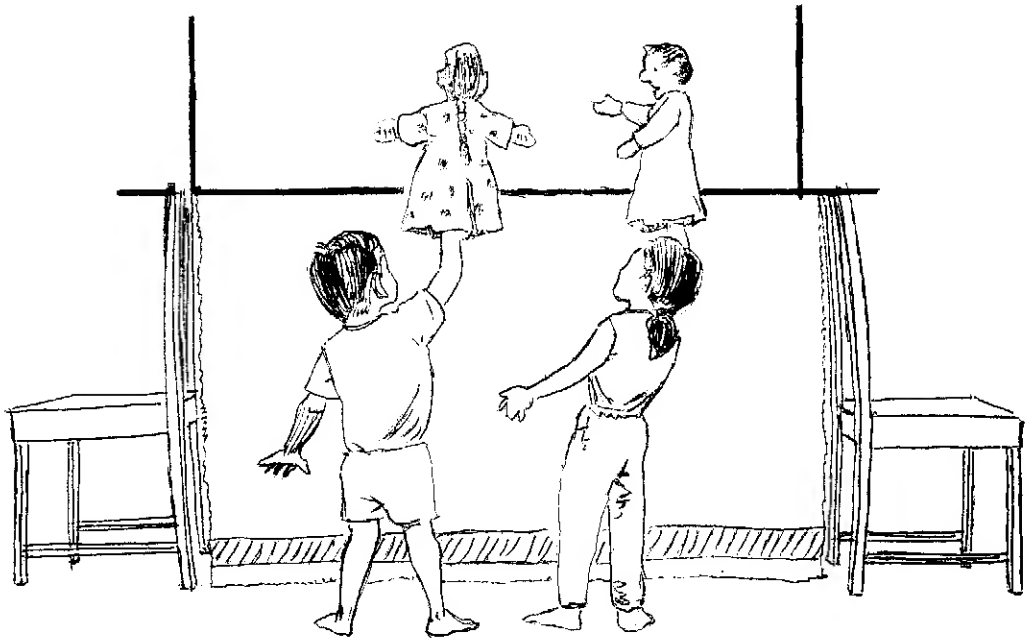

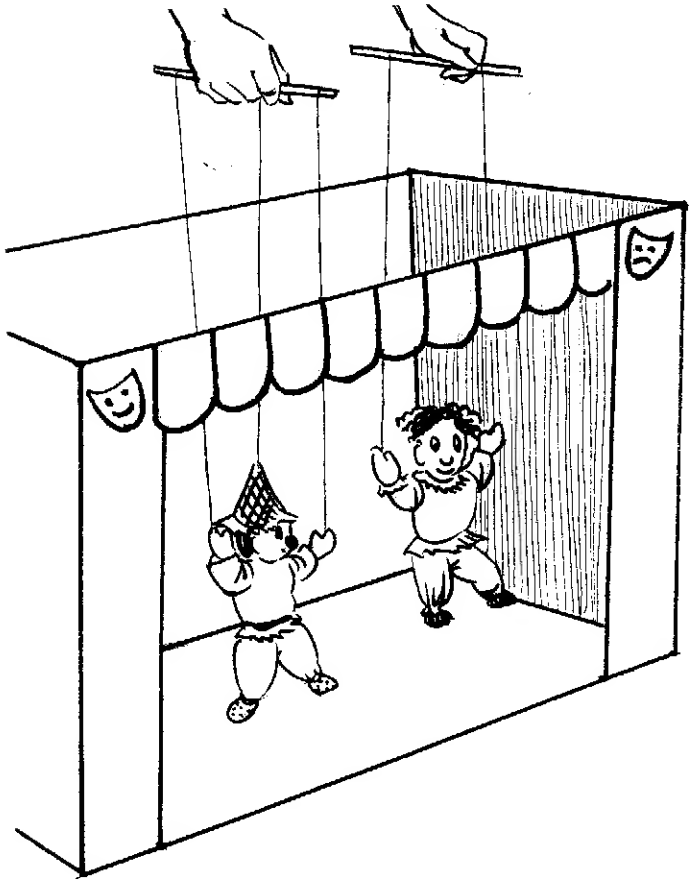

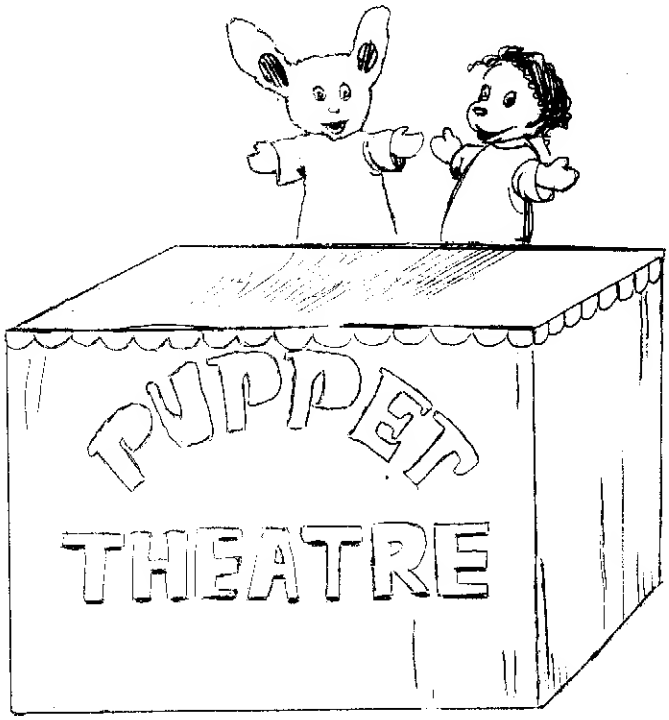
PUPPET
THEATRE

वस्तुओं के माध्यम से बच्चों की कल्पनाशक्ति का विकास होता है। ऐसी स्थिति में हरकतें करने वाली और बोलने वाली कठपुतलियों की रचना करने में उन्हें कितना आनंद मिलेगा! कठपुतलियां बनाने के कई तरीके हैं। लेकिन प्राथमिक पाठशाला के बच्चों को आसान तथा सस्ती कठपुतलियां बनाने की कला सिखाना सही होगा। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर बच्चों द्वारा जेब में इकट्ठा की गई निरर्थक चीजों का उपयोग किया जा सकता है। कठपुतलियां बनाते समय बच्चों से जाने-अनजाने कुछ नया ही बन जाता है। उदाहरण के तौर पर, बच्चे कुत्ता बनाना चाहते हैं, लेकिन बीच ही में विचार बदल जाने के कारण या फिर अचानक ही कुत्ते की जगह बिल्ली कब बन जाती है, पता ही नहीं चलता। इसी तरह बनानी होती है राजकुमारी और बन जाती है डायन से भी बदतर प्रतिमा। बहरहाल, मनपसंद कठपुतली बनाने की कला धीरे-धीरे आ जाती है। इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए कठपुतली खेल की पहली सीढ़ी के रूप में 'लिखित' कुछ न रखा जाए, कठपुतली बनाने पर ही जोर दिया जाए। कठपुतली बनाने में सभी बच्चों की दिलचस्पी नहीं होती। अतः बच्चों को छोटे-छोटे दलों में बांट दिया जाए और किसी एक दल को कटाई का, किसी को चिपकाने का तो किसी को रंगने का काम सौंप दिया जाए। ऐसा करने से सभी बच्चे निर्माण-प्रक्रिया में व्यस्त हो जाते हैं।

कठपुतली के खेल का दूसरा कदम कथानक वाला होता है। कठपुतलियां मानो पैदाइशी कलाकर होती हैं। उन्हें रंगमंच पर अपनी कला प्रस्तुत करने का अवसर सूत्रधार को, यानी हममें से किसी को देना ही होता है। इस हेतु किताब में से किसी अध्याय, कविता या प्रसंग-विशेष को चुनकर हमें उसे संवाद की शैली में ढालना होगा। अर्थात नाट्य रूपांतरण करना होगा। इस प्रकार की कोशिशों से बच्चों का 'संवाद-लेखन' से परिचय होता है। बच्चों को दलों में बांटकर उन्हें उपलब्ध कठपुतलियों के सहारे एकाध नाटिका अथवा संवादपरक प्रस्तुति तैयार करने के लिए कहा जाए। नाटिका के पात्रों से अधिक कठपुतलियां हमारे पास उपलब्ध हों तो अतिरिक्त कठपुतलियों को संचालक या कथाकार की भूमिका दी जा सकती है। इस अभ्यास के दौरान बच्चे बड़े उत्साह से अपनी नाट्य-प्रतिभा दिखाते हैं। कभी-कभी बच्चों को शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन देना जरूरी हो जाता है। इसके तहत नायक तथा नायिका के रूप में कठपुतलियों का चयन करना, फिर उतार-चढ़ावों वाली किसी घटना को तय करना, अतिरिक्त कठपुतलियों में से कौन-सी कठपुतली मददगार के रूप में और कौन-सी कठपुतली रोड़े अटकाने वाली भूमिका करेगी, यह निश्चित करना और अंत में छोटे-छोटे प्रसंगों के माध्यम से नाटिका तैयार करना आदि बातों को अंजाम देना होता है।

कठपुतली खेल की तीसरी सीढ़ी मंच का निर्माण करना होता है। एक छोटे-से कमरे में तत्काल तथा अस्थायी मंच तैयार करना हो, तो अनेक तरीके अपनाए जा सकते हैं :

1. कक्षा में उपलब्ध मेज को तीन ओर से कपड़े या कागज के सहारे ढंक दें और इसके पीछे छिपकर कठपुतलियों का संचालन करें।

2. दो कुर्सियों को एक निश्चित दूरी पर रखा जाए। कुर्सियों का पीठवाला हिस्सा एक-दूसरे की ओर हो। कुर्सियों पर एक डंडा रखें। इस पर चादर बिछाएं। चादर के पीछे छिपकर कठपुतलियों का संचालन करें।

3. मंच को वास्तविक रूप देने हेतु टीवी के डिब्बे या उसी आकार के किसी डिब्बे का उपयोग करना होगा। डिब्बे का निचला तथा ऊपरी हिस्सा काट दें। चार बाजुओं में से किसी एक बाजू का केवल बीच का हिस्सा हटा दें। इस तरह बने मंच को किसी ऊंची मेज पर रखें। अब बीच के हिस्से में कठपुतलियां नचाई जा सकती हैं।

उपर्युक्त मंच का निर्माण करते समय बच्चे भी इस काम में हिस्सा ले सकते हैं। यहां नेपथ्य के बारे में भी विचार किया जा सकता है। चित्रकला में माहिर बच्चों से तरह-तरह के चित्र बनवाए जा सकते हैं। इन चित्रों का उपयोग प्रसंगानुसार एक माहौल बनाने तथा मंच के पीछे टांगे जाने वाले परदे को चित्रित करने के लिए भी किया जा सकता है। जरूरी हो तो कथा को आगे बढ़ाने के लिए भी इन चित्रों का उपयोग हो सकता है।

कठपुतली के खेल का आखिरी, किंतु महत्त्वपूर्ण हिस्सा 'प्रस्तुतीकरण' होता है। प्रस्तुतीकरण में कठपुतली नचाना, संवाद अदायगी, संगीत, उद्घोषणा आदि का समावेश होता है। कठपुतली को नचाने के लिए हरेक को

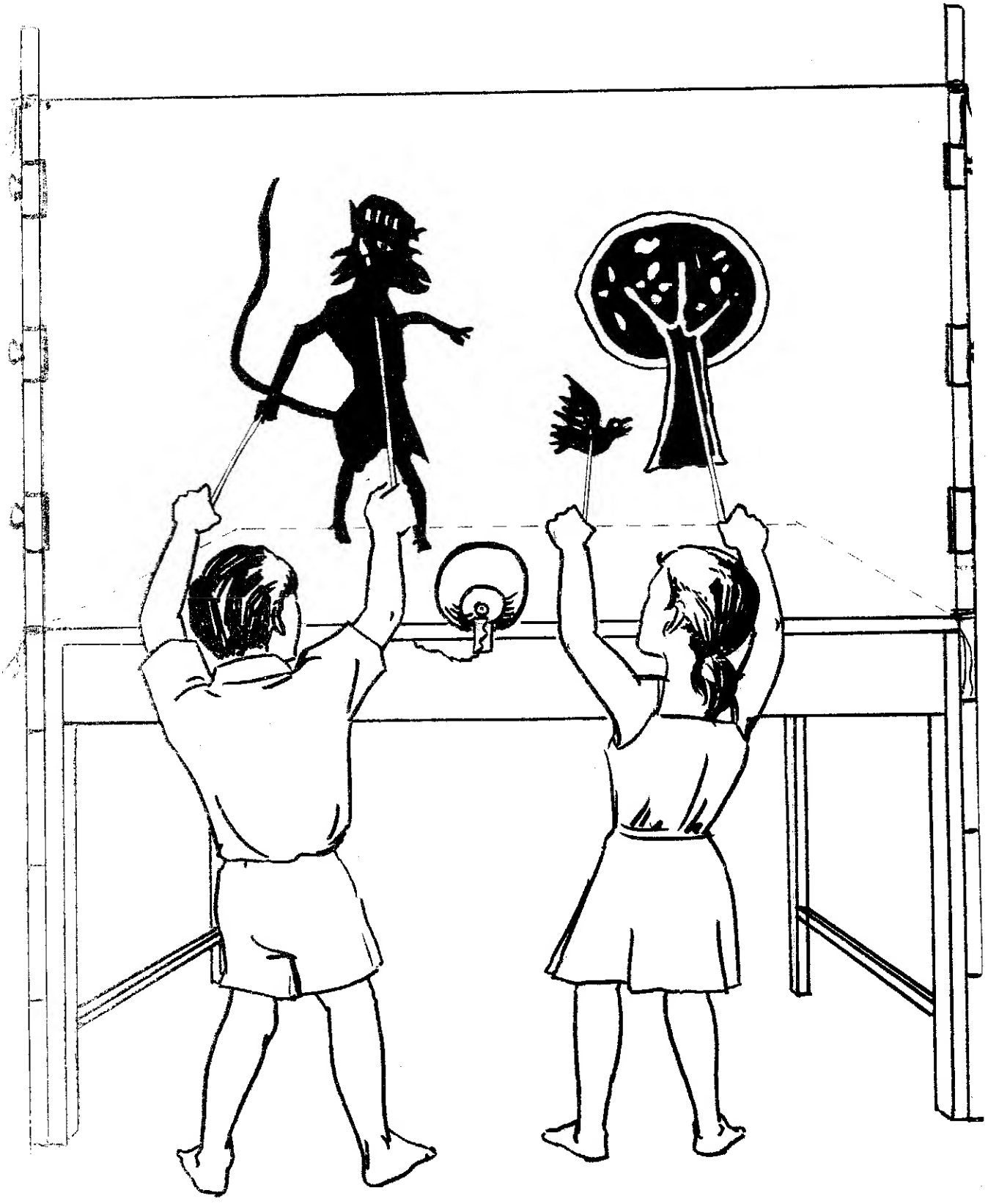

अपनी कठपुतली हाथ में पकड़नी होगी और उसे आवाज के माध्यम से बोलता हुआ पात्र बनाना होगा। खुद को मंच के पीछे छिपाकर कठपुतलियों की हरकतों का संचालन करना होगा। बच्चों के लिए यह आसान है, क्योंकि निरीक्षण तथा अनुकरण ये दो काम उक्त क्रिया के दौरान होते रहते हैं। बच्चों में निरीक्षण करते रहने की एक आदत होती है। दादा कैसे खांसते हैं, दादी कैसे चलती है, बंदर कैसे छलांग लगाते हैं आदि क्रियाओं की नकल बच्चा अपनी एकाध साल की उम्र से ही करने लगता है। अतः हाथ की कठपुतलियों को कथानक के चरित्रों के अनुसार नचाना उनके लिए मुश्किल काम नहीं है। थोड़े समय के अभ्यास से ही वे इन चीजों को आसानी से सीख लेते हैं। बहरहाल, कभी-कभार कोई अड़चन भी पैदा हो सकती है। उदाहरण के लिए, बच्चे कठपुतली को तो अच्छी तरह नचा लेते हैं लेकिन वे सही आवाज नहीं दे पाते, या फिर आवाज दे पाते हैं लेकिन कठपुतलियों का सही संचालन नहीं कर पाते। इस समस्या से बचने के लिए एक कठपुतली नचाने वाला और दूसरा संवाद बोलने वाला, ऐसे दो दल बना लिए जाएं। इससे बच्चों को जहां अधिक से अधिक अवसर मिलेगा, वहीं दोनों दलों में आपसी तालमेल भी बना रहेगा। आपसी तालमेल व्यक्तित्व निर्माण में मदद करता है।

कठपुतली का खेल एक सामूहिक कला है। इसमें आपसी तालमेल होना बहुत जरूरी है। जब सब लोग इकट्ठा काम करते हैं, तो वहां व्यक्तिगत अहं, स्वार्थ, हठ जैसी संकुचित प्रवृत्तियों को त्याग देना पड़ता है। इसके विपरीत, दूसरों को मदद पहुंचाना, किसी की कमजोरी को ठीक करना, एक-दूसरे के मेलजोल से उत्तम कृति का निर्माण करना जैसी क्रियाएं मानवीय प्रवृत्तियों को महत्त्व देती हैं। व्यक्तित्व का विकास इन्हीं छोटे-बड़े गुणों से संभव होता है। मनुष्य के अपने अनुभव भी इन्हीं छोटी-छोटी बातों के माध्यम से समृद्ध होते हैं। इन्हीं प्रसंगों के बहाने छात्रों का परिचय व्यक्तित्व के विकास के लिए जरूरी मानवीय क्षमता तथा कुशलता से होता है। तरह-तरह की कृतियों का निर्माण, नई-नई चुनौतियों से सामना, सही विकल्पों का चुनाव, इन विकल्पों से उत्पन्न होने वाली समस्याएं और उनका निराकरण... यही तो सांसारिक जीवन का स्वरूप है। ऐसे जीवन को जीते समय हमें परिश्रम, कभी-कभार की निराशाओं, साथ ही निरीक्षण तथा विवेक के माध्यम से किसी तत्त्व का आविष्कार, उचित-अनुचित को जानने संबंधी निर्णय और इस प्रक्रिया से मिलने वाले आनंद आदि-आदि पड़ावों से गुजरना होता है। कठपुतलियों के खेल के जरिए बच्चों का इन अनुभूतियों से सामना होता है, भले ही छोटे पैमाने पर। बुद्धि, कौशल तथा मूल्य आदि गुण मानव व्यक्तित्व के प्रमुख तत्त्व हैं। इन तत्त्वों के विकास हेतु कठपुतली का खेल उपयोगी सिद्ध होता है। भाषा के कारण मन परिष्कृत होता है। भाषा के माध्यम से संस्कार गढ़े जाते हैं, मनुष्य के भीतर मानवीयता पैदा की जाती है। यह तभी संभव है, जब भाषा का प्रयोग हो। हाथ में कठपुतली के आते ही बच्चे बोलने लगते हैं। कठपुतली को एक अलग व्यक्ति मानकर बच्चे बेझिझक बोलने लगते हैं। इस कारण बच्चों का शब्द-ज्ञान विकसित होता है। उन्हें सही उच्चारणों का पता चलता है। शब्दों का वजन तथा वाक्यों की बनावट संबंधी ज्ञान होता है। कई बार पढ़ाई का माध्यम एक भाषा होती है, जबकि उस विद्यालय में अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले छात्र भी पढ़ते हैं। ऐसे बच्चों को नई भाषा जानने-समझने में दिक्कत होती है। ऐसी स्थिति में ये बच्चे विद्यालय आने या पढ़ने से ही कतराते हैं। इस समस्या से उबरने के लिए इन बच्चों को कठपुतली की मदद से भाषा सिखाई जा सकती है और शिक्षा में उनकी रुचि को भी बनाए रखा जा सकता है।

कठपुतली काल-विशेष तक सीमित नहीं होती। भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य से संबंधित किसी भी कथानक को कठपुतली के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। इतिहास की शिक्षा देते समय शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप या अन्य किसी भी इतिहास-पुरुष के इर्द-गिर्द बुनी कहानी कठपुतली खेल के जरिए प्रस्तुत की जा सकती है। इस खेल में अमूर्त संकल्पनाएं मूर्त की जा सकती हैं। हवा, ऊष्णता, विटामिन, एड्स रूपी राक्षस, तंबाकू रूपी दानव आदि-आदि समस्याओं या रूपों को कठपुतली के जरिए साकार किया जा सकता है। विज्ञान विषय सिखाते समय भी कठपुतलियों की मदद ली जा सकती है।

कठपुतली के सहारे नागरिकशास्त्र की पढ़ाई भी बच्चों को आसान लगती है। उपदेश देने की बजाय जीवन की अच्छाइयों-बुराइयों को कठपुतली खेल के जरिए समझाया जाए तो बच्चे जीवन के

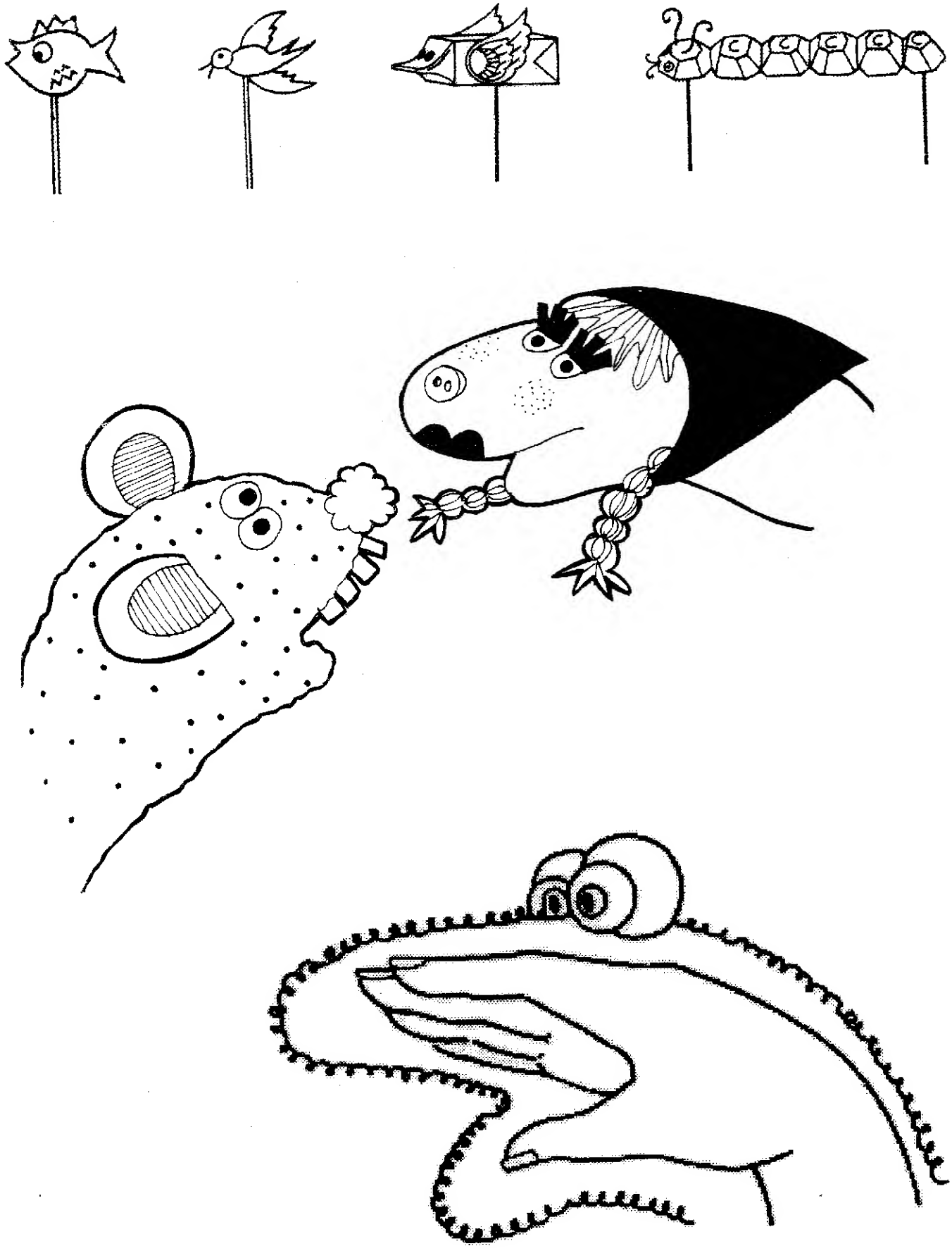

सही-गलत पक्ष को समझ लेते हैं।

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को अंकों का परिचय देने में तथा आसान गणित, जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भाग करना सिखाते समय भी कठपुतली मददगार साबित होती है। कहा जाता है कि बादशाह अकबर को बचपन में कबूतर बहुत भाते थे। अतः शिक्षक अकबर को गणित सिखाते समय कबूतरों की मदद लिया करते थे। इसी उदाहरण को ध्यान में रखते हुए कठपुतली के सहारे गणित जैसे विषय को भी दिलचस्प बनाया जा सकता है।

सामाजिक जीवन और उसकी समस्याओं का परिचय कराने के लिए भी कठपुतलियों का खेल रचा जा सकता है। मान लिया जाए कि शहर में रहने वाले माता-पिता सुबह ही दफ्तर चले गए हैं या गांव में रहने वाले माता-पिता खेतों पर मेहनत करने हेतु निकल गए हैं, ऐसी स्थिति में बड़े बच्चों को अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करनी होती है। बड़े बच्चे भी लगभग सात-आठ साल के ही होते हैं। देखभाल का उदाहरण पेश करते समय दो कथानक प्रस्तुत किए जा सकते हैं। पहले कथानक के अनुसार एक लड़की अपने छोटे भाई की देखभाल कर रही है। इसी समय लड़की की सहेली वहां आकर उसे खेलने के लिए बाहर चलने हेतु उकसाती है। भाई की उपेक्षा करते हुए लड़की अपनी सहेली के साथ खेलने निकल पड़ती है। घर में छोटा भाई मिट्टी खाने लगता है, रेंगते-रेंगते गरम बर्तन की ओर बढ़ता है और अपना हाथ जला बैठता है आदि-आदि। दूसरे कथानक के अंतर्गत वही लड़की साफ इंकार कर देती है कि भाई को अकेला छोड़कर वह खेलने नहीं जाएगी। सहेली खाने की चीज दिखाकर लालच देती है। लड़की दुविधा में फंस जाती है। वह दिमाग लड़ाती है और भाई को भी साथ लेकर खेलने निकल जाती है। इस तरह खेलना और देखभाल दोनों काम एक साथ हो सकते हैं। इस प्रकार कथानक प्रस्तुत कर बच्चों का जहां मनोरंजन किया जा सकता है, वहीं उन्हें सीख भी दी जा सकती है। समस्या खड़ी होने पर उसे कैसे सुलझाया जाए, इसका ज्ञान भी बच्चों को होता है।

कठपुतली के खेल के लिए तो मानो सभी विषय अनुकूल हैं; उदाहरण के लिए, प्राणी जगत, मानव संबंधी विभिन्न जानकारियां, खेत-खलिहानों में मेहनत करनेवाले जानवर, किसान द्वारा इन जानवरों की की जाने वाली परवरिश, जानवरों द्वारा की जाने वाली किसानों की सेवा, परिवार-विशेष का परिचय, परिवार के सदस्यों के बीच आपसी संबंध, उनके आपसी व्यवहार के तौर-तरीके, भिन्न-भिन्न व्यवसाय, इन व्यवसायों से जुड़े लोग आदि-आदि।

अब तक गिनाए गए विषयों को प्रस्तुत करने के लिए चित्र, स्थिर चित्र पट्टिका, सिनेमा, टेलीविजन आदि माध्यमों का भी उपयोग हो सकता है। इस सच्चाई को भी समझना होगा कि चित्र या तस्वीर जहां निर्जीव होते हैं, वहीं कठपुतली सजीव होती है, कम से कम बच्चों के मामले में। सिनेमा की तस्वीरें भले ही जानदार होती हों, लेकिन उन्हें छुआ तो नहीं जा सकता। बच्चों को चीजों को छूकर देखने, उनका स्पर्श अनुभव करने में कुछ अलग ही आनंद आता है। मानो स्पर्श करके ही वे चीजों की वास्तविकता को समझना चाहते हों। बच्चे कठपुतलियों को छूकर देख-परख सकते हैं। यह भी सच्चाई है कि अन्य दृश्य-श्रव्य माध्यमों में तकनीकी तामझाम की मात्रा अधिक होती है, जबकि कठपुतली के खेल में अपेक्षाकृत सादगी होती है।

नियमित अंतराल से, एक प्रयास के रूप में कठपुतली का खेल प्रस्तुत किया जाए तो शिक्षा को छात्र-केंद्रित बनाया जा सकता है। छात्रों में उम्मीदें जगेंगी और वे अपने भीतर की कला तथा प्रतिभा को उजागर करने की कोशिश करेंगे।

हर चीज के दो पक्ष होते हैं, अच्छा तथा बुरा। कठपुतली भी अपवाद नहीं है। शिक्षकों को शुरू में ही तय कर लेना होगा कि कठपुतली का उपयोग कहां किया जाए। अध्याय की शुरुआत यानी प्रस्तावना के समय, विषय प्रतिपादन के समय, पाठ दोहराते समय या किसी और बिंदु पर। शिक्षा के लिए कठपुतली आसान साधन है। अतः इसका बार-बार उपयोग भी सही नहीं होगा। क्योंकि बार-बार के प्रयोग से मतिभ्रम होने की संभावना बनी रहती है। कोई नई मनपसंद चीज मिल जाने पर व्यक्ति के उसी में खो जाने की संभावना बनी रहती है। अतः व्यक्ति अपने मूल उद्देश्य से भटक सकता है। इन सारी बातों को ध्यान में रखना होगा और इस तथ्य को भी कि आखिरकार कठपुतली एक साधन है, साध्य नहीं।

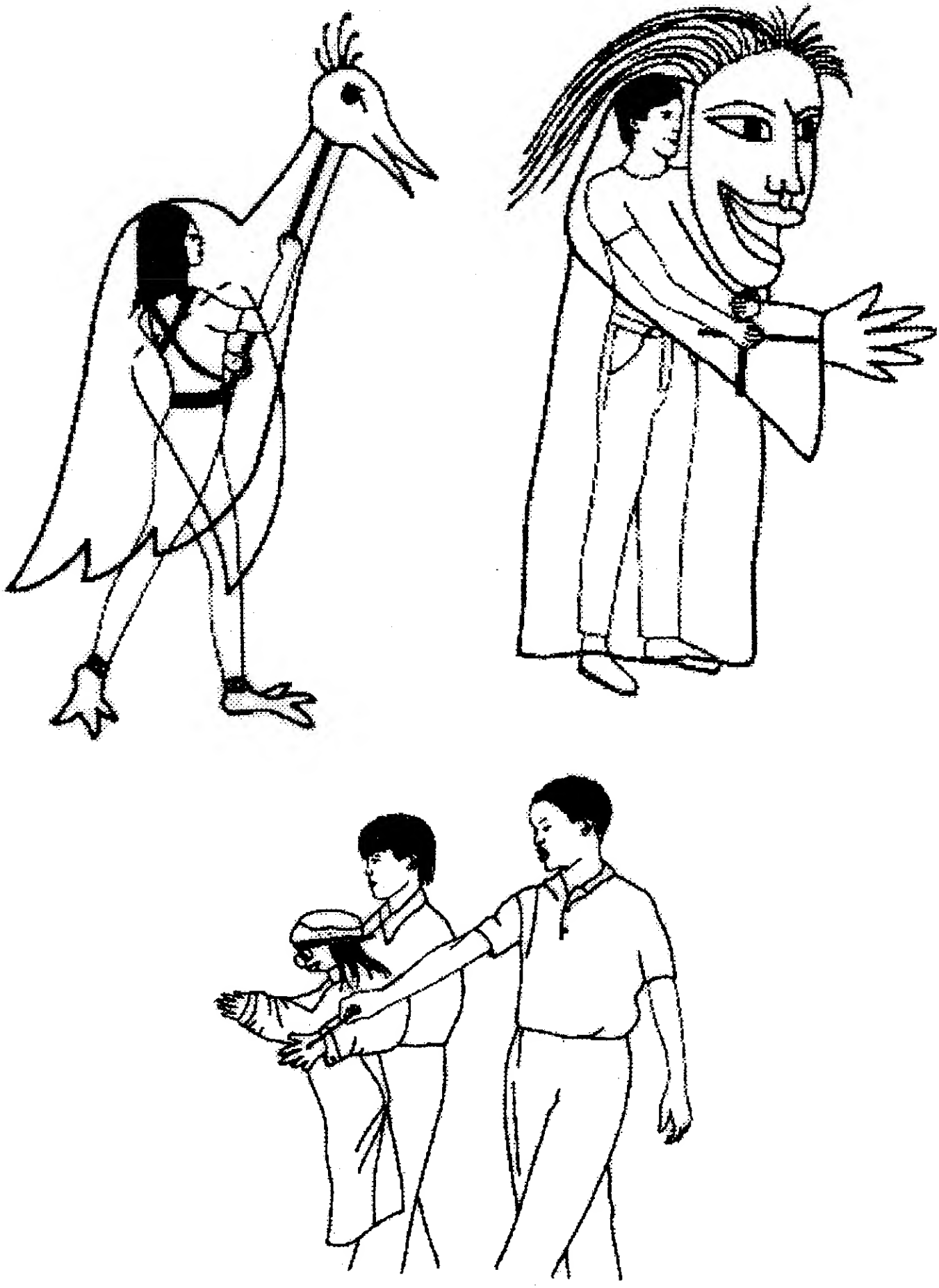

कठपुतली का खेल प्रस्तुत करते समय बरती जाने वाली सावधानियां

1. कठपुतलियां सीधी, सरल और आसान बनाई जाएं। एक बैठक में एक कठपुतली बन पाए, यही सरलता का मानदंड होगा। तभी बनाने वाले को आनंद आएगा। कठपुतली बनाने में, संभव हो तो पुरानी और इस्तेमाल में न आने वाली चीजों का उपयोग करें। पुरानी चीजों से नई चीज बनाने में एक अलग प्रकार का आनंद मिलता है। कठपुतली बनाते समय अतिशय या अतिरेक का सहारा लिया जाए, वह मानव की शब्दशः नकल न हो। छोटी-छोटी बातें तथा अनावश्यक विशेषताएं टालें। आंखें बड़ी हों। कठपुतली के रंग खड़े या उभार वाले हों। कठपुतली का आकार उंगली जितना या पूरे मनुष्य के आकार जितना भी हो सकता है, इस पर कोई पाबंदी नहीं है। लेकिन कठपुतली आसानी से हिलाई-डुलाई जा सके, ऐसी जरूर हो। तभी उसे कठपुतली कहा जाएगा, वरना वह शिल्प-कृति बन जाएगी।
2. कठपुतलियां बन जाने के बाद कथानक चुनें। कथानक के चरित्रों-पात्रों के अनुरूप आपके पास कठपुतलियां उपलब्ध न हों, तो कथानक के चरित्र-पात्र बदल दें। अपने पास उपलब्ध कठपुतलियों के अनुसार कथानक में फेर-बदल करें।

   संवाद छोटे-छोटे और आसान हों। भाषणबाजी का सहारा न लिया जाए। कठपुतलियों की गतिशीलता तथा हलचल के कारण कथानक आगे बढ़ता है तथा नए-नए प्रसंग बनते जाते हैं और बात दर्शकों तक सही ढंग से पहुंचती रहती है। यह तरीका फलदायी भी साबित होता है।

   कभी-कभार बच्चों को कथानक की रूपरेखा बता देनी चाहिए और उन्हें स्वयं संवाद-रचना के लिए प्रेरित करें। ऐसे प्रयासों से बच्चों की भाषा पर पकड़ मजबूत होती जाती है।

   कभी-कभार बच्चों के हाथ में कठपुतलियां दे सकते हैं और उन्हें तुरंत उसी समय खड़े होकर संवादों के जरिए नाटक तैयार करने के लिए कह सकते हैं। लेकिन शिक्षक ऐसे समय सावधानी बरतें कि नाटक लंबा तथा उबाऊ न बन जाए।
3. कठपुतली का खेल प्रस्तुत करने के लिए मंच का होना जरूरी नहीं है। नेपथ्य के किसी हिस्से में छिपकर भी कठपुतली का खेल प्रस्तुत किया जा सकता है। किसी पत्थर के पीछे छिपकर पत्थर पर मेंढक के रूप में कठपुतली नचाई जा सकती है। इसी तरह, पहाड़ के कट-आउट को आधार बनाकर राक्षस नचाया जा सकता है। कई बार तो स्वयं सूत्रधार विशाल कठपुतली के पीछे छिप जाता है और कठपुतली नचाता है। विशाल कठपुतली के खोल में भी सूत्रधार घुस सकता है और कठपुतली के बहाने नाच सकता है। ऐसे समय वह खोल में पूरी तरह छुपा होता है। इस प्रकार बाकायदा मंच के अभाव में भी कठपुतली का खेल प्रस्तुत किया जा सकता है। जापानी पद्धति के अनुसार सूत्रधार काले कपड़े पहनता है और चेहरे को भी काले कपड़े से ढक लेता है। फिर वह कठपुतलियों के साथ मंच पर आता है। अपनी हरकतों से ये कठपुतलियां दर्शकों को इस प्रकार आकर्षित करती हैं कि सूत्रधार की ओर दर्शकों का ध्यान ही नहीं जाता।

   कठपुतली के खेल के लिए यदि बाकायदा मंच बनाने की सोचें तो एक वातावरण बनाने के दृष्टिकोण से नेपथ्य का निर्माण तथा कट-आउट्स का उपयोग भी जरूरी है। इस हेतु कभी पृष्ठभूमि में रंगीन परदा टांगना चाहिए, तो कभी लकड़ी से बने स्टैंड पर पेड़, मकान, पाठशाला आदि के कट-आउट्स खड़े करने चाहिए। इससे मंच पर एक गहराई का निर्माण होता है। इस सुविधा के कारण कठपुतली पेड़ के इर्द-गिर्द घूम-फिर सकती है, घर के भीतर आ-जा सकती है।

   कठपुतली के खेल में पात्रों के लिए आवश्यक छोटी-मोटी वस्तुएं, उपकरण, औजार आदि बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होते। उनका निर्माण हमें स्वयं करना होता है। निर्माण करते समय कठपुतली के

आकार के अनुसार उनका आकार तय करना होता है। बहरहाल, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाना आवश्यक ही होगा। उदाहरण के तौर पर, एक छोटी बच्ची अपने पाठ्यक्रम की पुस्तक का हवाला देकर अपनी मां से कहेगी कि वह उसे अमुक-अमुक कविता को पढ़ना और लय पर गाना सिखाए। मां उसे सिखाती है। ऐसे समय लड़की के हाथों में (नकली) पुस्तक, जिसके मुखपृष्ठ पर पुस्तक का नाम लिखा हो, का होना बहुत आवश्यक है। बच्चों को ऐसी छोटी-छोटी बातें एक अलग प्रकार का आनंद देती हैं। गिलास, बोतल, छाता, कुर्सी, रेडियो सेट, कुल्हाड़ी आदि वस्तुओं की भी जरूरत पड़ती है। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए बोतल तथा डिब्बों के ढक्कन, पदक, छोटे खाली डिब्बे आदि निरर्थक वस्तुओं को रंगकर अपनी जरूरत के अनुसार रूप दिया जा सकता है। लेकिन ऐसा करना अनिवार्य है और इसे टाला नहीं जाना चाहिए।

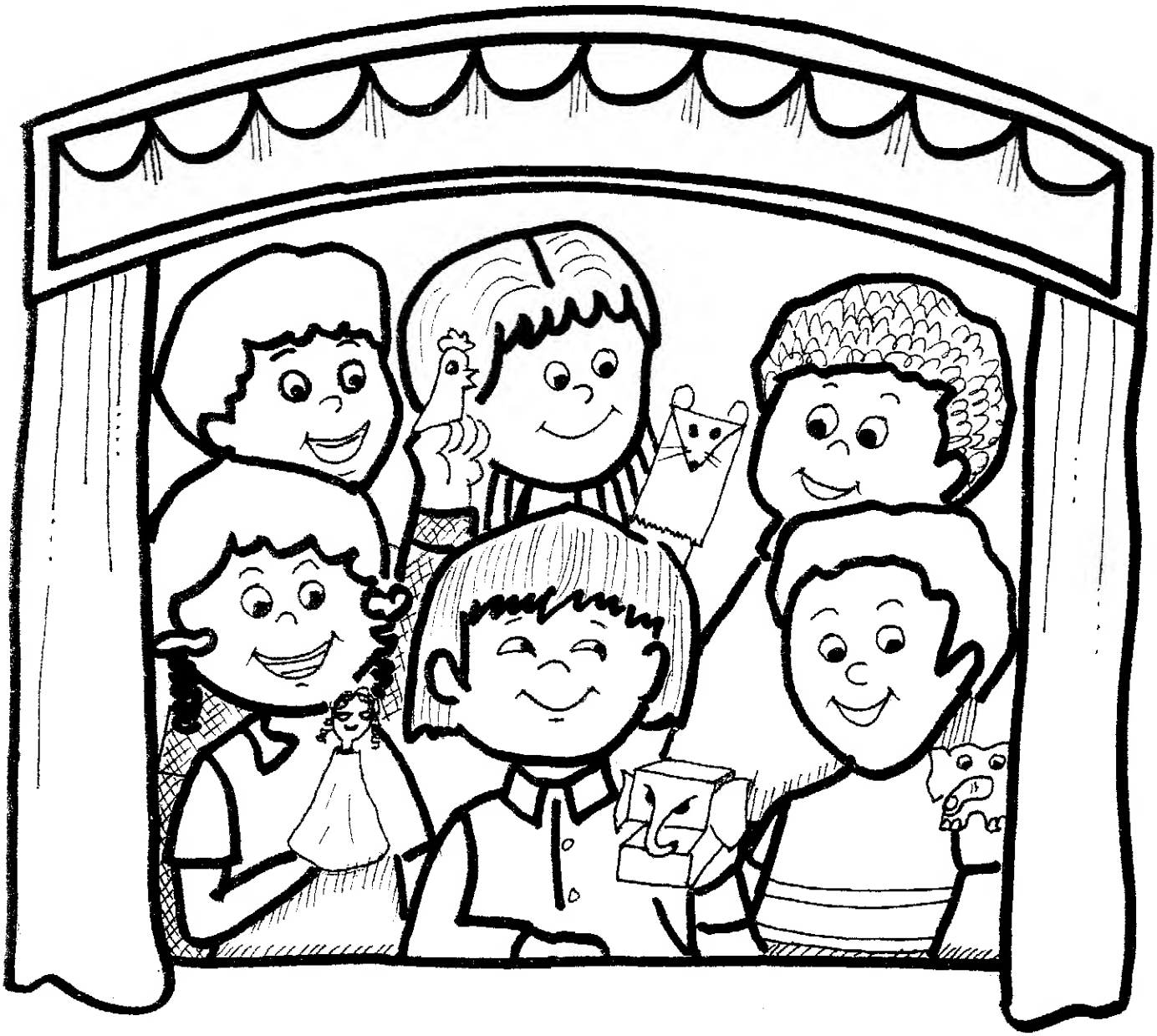

4. कठपुतली खेल का प्रस्तुतीकरण महत्वपूर्ण और कठिन काम होता है। क्योंकि सूत्रधार को अपना सारा ध्यान कठपुतली पर केंद्रित करना होता है। कई बार स्वयं सूत्रधार अभिनय करने लगता है, फलस्वरूप कठपुतली सूत्रधार के हाथ में बेजान पड़ी रहती है। सूत्रधार को इस बात पर ध्यान देना होगा और सही संचालन की आदत डालनी पड़ेगी।

एक और बात सूत्रधार को ध्यान में रखनी होती है, वह यह कि कठपुतली जब बोले उसी समय उसकी हलचल भी हो। बाकी समय कोई हरकत न करते हुए कठपुतली को केवल खड़ा रहना चाहिए। यदि मंच पर दो ही पात्र हों, तो यह उचित होगा कि एक कठपुतली की गतिविधि के जवाब में दूसरा हलचल करे। कई बार यह भी देखने में आता है कि सूत्रधार के हाथों में कठपुतली आई नहीं कि वह आदतन उसे हिलाने लगता है। इस कारण, जब कठपुतली कोई संवाद नहीं बोल रही होती तब भी वह हिल रही होती है। और इसी कारण दर्शक यह नहीं समझ पाते कि कौन-सा पात्र बोल रहा है, कौन-सा नहीं।

हर कठपुतली को एक अलग आवाज दी जानी चाहिए। बूढ़ी औरत, लड़की, चूहा, हाथी आदि विभिन्न पात्रों की जबान में उनके चरित्र के अनुसार आवाज डाली जाए। संवाद में उतार-चढ़ाव भी पात्रों के अनुसार ही हो। यह तरीका अपनाने से प्रस्तुति अधिक असरदार बनेगी। कई बार अपनी असली आवाज बदलकर विचित्र आवाज निकाली जाए तो अलग ही मजा आता है। आवाज में परिवर्तन के कारण ही दर्शक पात्रों को पहचान पाते हैं। क्योंकि कठपुतलियां अपने चेहरे पर भाव-प्रदर्शन तो कर नहीं सकतीं। कई बार वे अपने होंठ भी नहीं हिला पातीं। अतः आवाज के माध्यम से ही अभिनीत पात्र का चरित्र अधिक से अधिक उभारा जाना चाहिए।

आमतौर पर एक ही समय मंच पर बोलने वाली कठपुतलियों की संख्या चार या पांच ही हो। कई पात्रों को इकट्ठे मंच पर देखकर दर्शक भ्रमित हो जाते हैं। लेकिन नृत्य प्रस्तुत करते समय कठपुतलियों की संख्या अधिक भी हो सकती है। क्योंकि ये कठपुतलियां केवल नृत्य प्रस्तुत करती हैं, संवाद नहीं बोलतीं। संगीत का अपना अलग असर होता है।

जिस तरह जीवित पात्रों के नाटकों में पात्र मंच पर बिखरे होते हैं, उसी तरह कठपुतली के खेल में भी पात्रों को अलग-अलग जगह खड़ा करना चाहिए, न कि एक ही कतार में। ऐसा करते समय पात्रों को आगे-पीछे तथा दो-दो, तीन-तीन के दलों में खड़ा करना चाहिए। यह तरीका अपनाने से मंच की गहराई का पता चलता है। कथानक में भी जान आती है।

कठपुतली के खेल को संगीतमय बनाया जाए, तो वह अधिक मनोरंजक साबित होता है। संगीत रिकॉर्ड किया जा सकता है। लेकिन प्रत्यक्ष खेल के समय निर्मित संगीत का अपना असर होता है। बहरहाल, पाठशाला के स्तर पर रिकॉर्डर, साज, गायक, वादक आदि बातों को लेकर अड़ियल रुख नहीं अपनाना चाहिए, बल्कि रचनात्मक दृष्टिकोण रखते हुए संगीत का निर्माण होना चाहिए। उदाहरणतः, मुंह से तरह-तरह की आवाजें निकालना, खिलौना-वाद्ययंत्रों का उपयोग, डिब्बों, बोतलों, बर्तनों आदि घरेलू उपकरणों की मदद से संगीत का निर्माण आदि। कल्पना-शक्ति तथा प्रतीकात्मकता को अपनाकर कठपुतली के खेल को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

खेल की अवधि 10 से 15 मिनट से अधिक न हो। छोटे-छोटे खेल अधिक संख्या में प्रस्तुत किए जाएं। एक ही खेल काफी लंबे समय तक दिखाते रहें तो दर्शक अपनी रुचि खो देते हैं।

कठपुतली का खेल एक परंपरागत कला है। वर्तमान समय में उसे आधुनिक स्वरूप देने की कोशिश की जा रही है। कोई भी लोक-कला स्वयं में मौजूद खुलेपन तथा लचीलेपन के कारण अपना स्थान बनाती है। अतः कठपुतली कला को आधुनिक स्वरूप देते समय उसका लचीलापन नष्ट न हो, इसका ध्यान जरूर रखा जाए। उसका खुलापन भी सीमित न हो। इस लिहाज से शुरुआत से लेकर प्रस्तुतीकरण तक कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता को महत्त्व देना चाहिए। तभी एक अनोखी कला दर्शक देख पाएंगे।

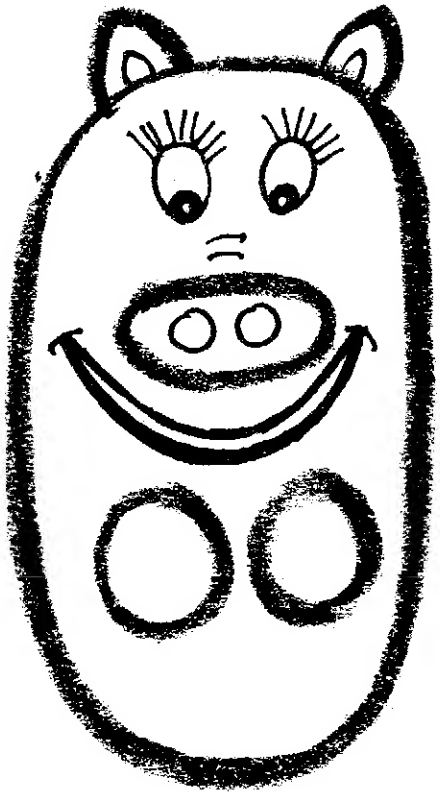

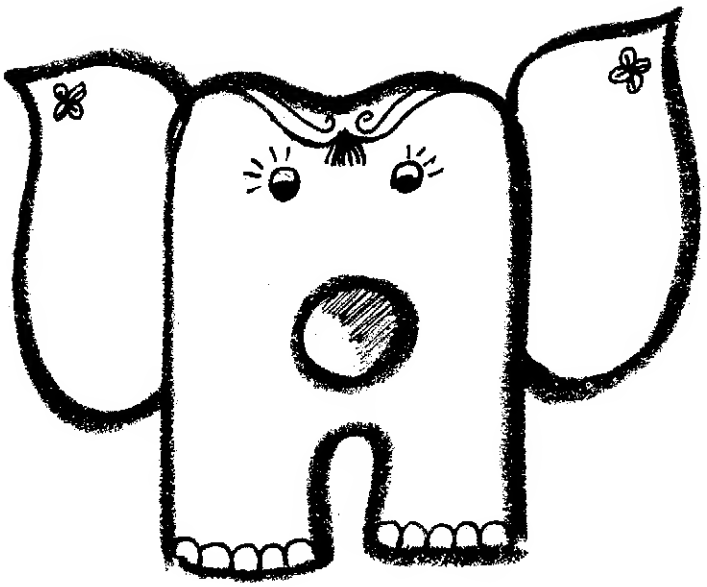

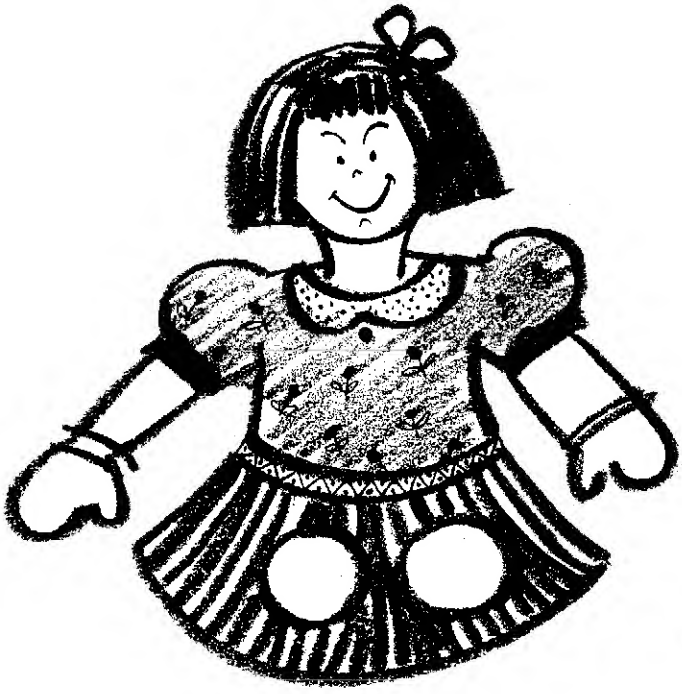

उंगलियों से नचाई जाने वाली कठपुतलियां

सामग्री : थोड़ा मोटा कागज। पुराना पोस्टकार्ड या नोटबुक के मुखपृष्ठ का भी उपयोग किया जा सकता है। रंग, कैंची आदि।

तरीका : लगभग 10X10 सेमी आकार के कागज पर यहां दिखाए गए चित्रों के नमूनों के अनुसार हाथी, सूअर या लड़की का चित्र बनाएं। हाथी की सूंड़ के स्थान पर अपनी उंगली की मोटाई के आकार का छेद करें। लड़की या किसी भी प्राणी के दो पैर बनाने हेतु दो गोलाकार टुकड़े काटकर अलग करें। कठपुतलियों पर बढ़िया रंग चढ़ाएं। कठपुतली के संचालन हेतु अपनी उंगली का उपयोग करें। अपनी तर्जनी को हाथी की हिलती सूंड़ बनाएं। लड़की अथवा अन्य किसी प्राणी के दो पैर दर्शाने के लिए तर्जनी तथा बीच की उंगली उपयोग में लाएं। इस तरह दो हाथों में दो कठपुतलियां पहनकर खेल आगे बढ़ाएं।

स्कूल में भाषाएं पढ़ाते समय कठपुतलियों की छोटी-छोटी हरकतों का सहारा लें और बच्चों का शब्दों तथा आसान वाक्यों से परिचय कराएं।

अवधि : केवल 10 मिनट।

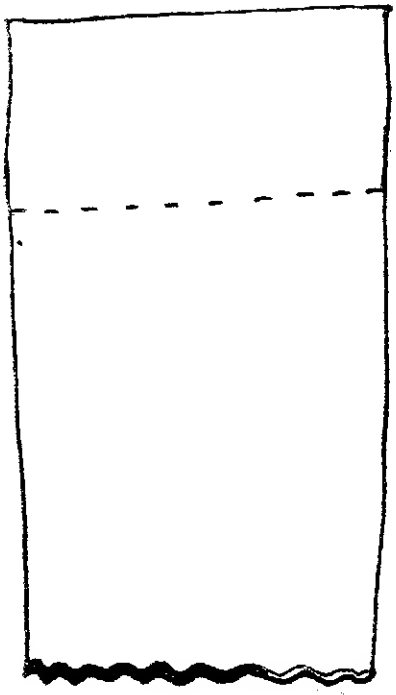

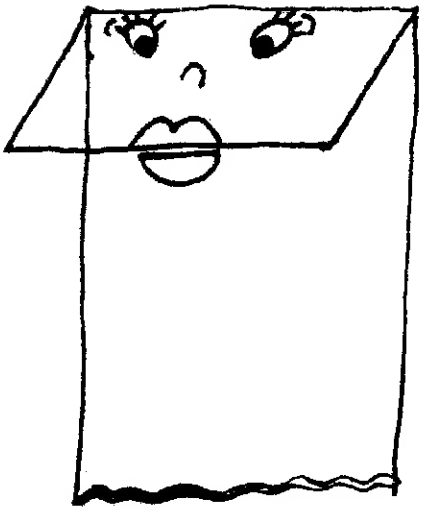

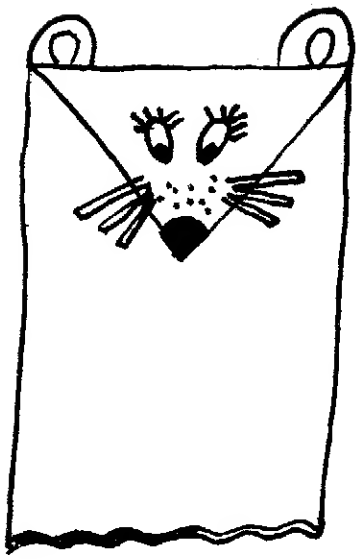

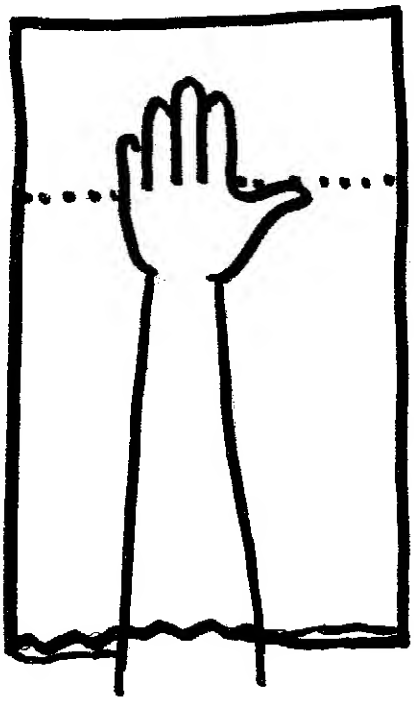

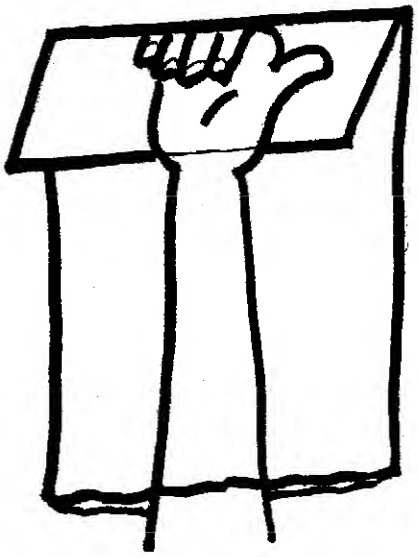

कागज की थैलियों से बनी बोलती कठपुतलियां

सामग्री : लगभग 17X29 सेमी आकार वाली कोरे कागज की थैलियां, रंग, कैंची आदि।

तरीका : दिखाए गए चित्रों के नमूनों के अनुसार कागज की थैली को तह कर लें। तह किए गए हिस्से की लंबाई थैली की लंबाई के आधे से कम हो। चूहा बनाने के लिए नुकीले हिस्से की जरूरत होती है। अतः पुनः दो त्रिकोणीय तह कीजिए। तह करते समय थैली के बंद हिस्से का उपयोग करना चाहिए, जबकि खुले हिस्से को खुला ही रखना चाहिए। इसी खुले हिस्से में हाथ डालकर कठपुतली नचाना होता है। कठपुतली के कान दिखाने हों तो अलग कागज का उपयोग होना चाहिए। चुने हुए प्राणी के कान की तरह कागजी कान काटे जाएं और उन्हें तह किए गए हिस्से के पिछले भाग में चिपकाया जाए।

इस तरह तैयार कठपुतली को रंगें। मानव-कठपुतली हो तो ऊपरी तह वाले हिस्से पर ऊपरी होंठ का निशान बनाएं, जबकि निचली तह पर निचले होंठ का निशान बनाएं। जब दोनों हिस्से हिलेंगे तो ऐसा लगेगा कि कठपुतली बोल रही है। कठपुतली के माध्यम से कोई प्राणी दिखाया गया हो तो उसके जबड़े दिखाएं।

हाथ का पंजा थैली में डालकर अपनी चार उंगलियों को भीतर की ओर मोड़ें। ये मुड़ी उंगलियां तह किए गए स्थान से सटाकर रखें। इन उंगलियों को इकट्ठे हिलाया जाए तो ऐसा महसूस होता है कठपुतली बोल रही है।

अवधि : केवल 10 मिनट।

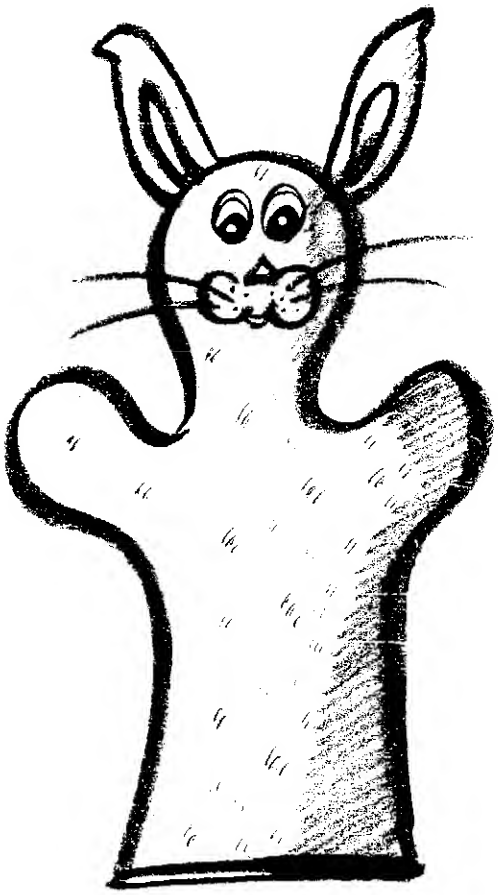

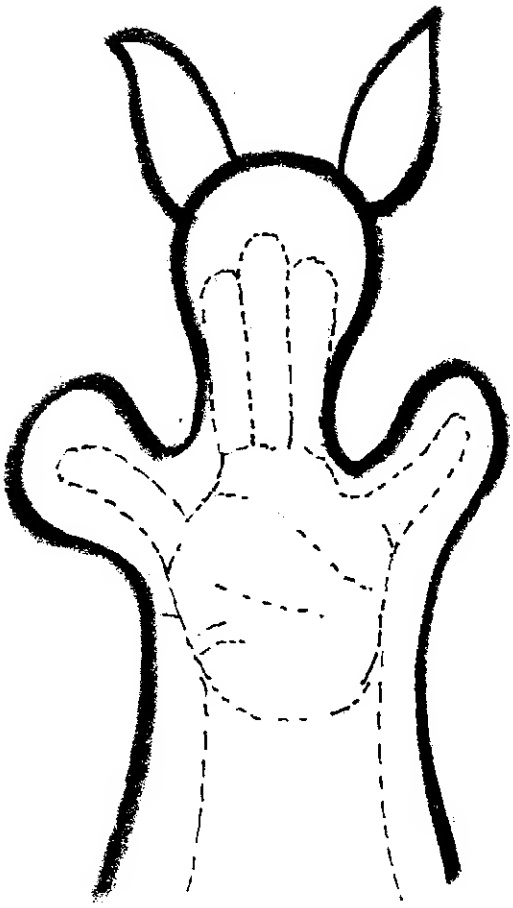

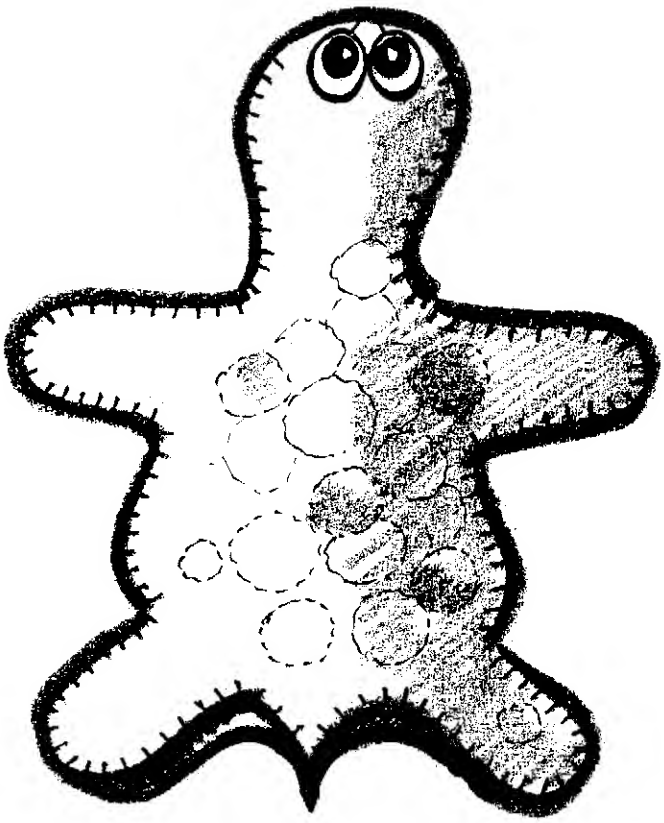

सामान्य हाथकठपुतली—खरगोश और कछुआ

सामग्री : ऐसा फेल्ट कपड़ा जिसके धागे न निकलते हों, अथवा कोई भी मोटा-सा सूती कपड़ा। सूई-धागा, कैंची, बटन अथवा हिलने वाली आंखें, रंग।

तरीका : दिखाए गए चित्र के अनुसार किसी कागज पर पंजा रखकर उसकी बाहरी रूपरेखा अंकित कर लें। रेखाएं उंगलियों से सटाकर नहीं बल्कि लगभग आधा इंच का अंतर रखकर खींची जाएं। इस आकृति को काट लें। इसी आकृति को आधार बनाकर कपड़े की दो आकृतियां काट लें। इस हेतु एक कपड़े पर दूसरा कपड़ा बिछाएं ताकि कपड़े की दो आकृतियां समान और इकट्ठी मिल जाएं। यदि फेल्ट कपड़े का उपयोग किया गया हो तो दोनों कपड़ों को ऊपरी सतह पर ही सिल लिया जाए, पंजे का निचला हिस्सा न सिलें, ताकि इस खोल में हाथ डाला जा सके और कठपुतली नचाई जा सके। खरगोश या चुने हुए प्राणी को ध्यान में रखकर अलग कपड़े पर कान की आकृति काट लें। इसे बतौर कान पंजे के खोल पर सिल लें। यदि आम सूती कपड़ा का उपयोग किया गया हो तो सिलाई भीतरी हिस्से में करें। कपड़े के दिखाई देने वाले हिस्से पर कान सिलें। दोनों मामलों में सिलाई हाथ से की जा सकती है या मशीन पर।

कछुए की आकृति बनानी हो तो दो पैर भी जोड़ने होंगे। नमूने के चित्र में यह आकृति दिखाई गई है। इन पैरों को न सिलें, वरना कठपुतली में हाथ डालना असंभव हो जाएगा।

इन कठपुतलियों पर अलग-अलग रंगीन कपड़ों से बनी नाक, आंख, मुंह चिपकाएं। रेशम की कढ़ाई भी की जा सकती है। काफी छोटे बच्चे भी फेल्ट पेन की मदद से उसमें रंग भर दें तो कठपुतली सुंदर दिखेंगी।

इस तरीके को अपनाकर एक साथ लड़की, लड़का, मां, राक्षस, परी आदि कठपुतलियों का निर्माण करना हो, तो उनसे बाल, दाढ़ी-मूंछें आदि बनाई जा सकती हैं। गले के इर्द-गिर्द की झालर के लिए अलग से कोई कपड़ा उपयोग में लाना चाहिए, या फिर (खाना बनाते समय पहने जाने वाले एप्रन की तरह) कठपुतली को एप्रन पहनाया जाए ताकि कठपुतली का रूप और निखर आए। प्रतीकात्मकता का सहारा लेकर बटन, लेस आदि का उपयोग कर पोशाक को अलग रूप दिया जा सकता है।

कठपुतली के पंजे एक अंगूठे तथा चार अंगुलियों के माध्यम से दिखाने चाहिए। ऐसा करने से दर्शक मानव तथा अन्य प्राणियों में अंतर कर पाते हैं।

इस प्रकार सुझाई गई कठपुतलियां बनाने तथा नचाने में बड़ी आसानी होती है।

सुझाव : चेहरा बनाने के लिए खाली बोतलों, डिब्बों या गेंद का भी उपयोग हो सकता है। सिर पर कपड़े का टुकड़ा गोलाकार नहीं, बल्कि सीधे तानकर रखा जाना चाहिए। डिब्बे या गेंद में एक छेद किया जाए और उसमें सिर वाला हिस्सा डाला जाए। डिब्बे, गेंद या बोतल पर कागज चिपकाया जाना चाहिए। कोई पुराना मोजा भी तानकर चिपकाया जा सकता है। उस पर नाक, आंखें और मुंह चिपकाएं। गेंद पर दोनों ओर दो आंखें तथा मोटे कागज से बनीं चोंच चिपका दी जाए तो कठपुतली पक्षी का रूप ले लेती है।

अवधि : 40 से 60 मिनट।

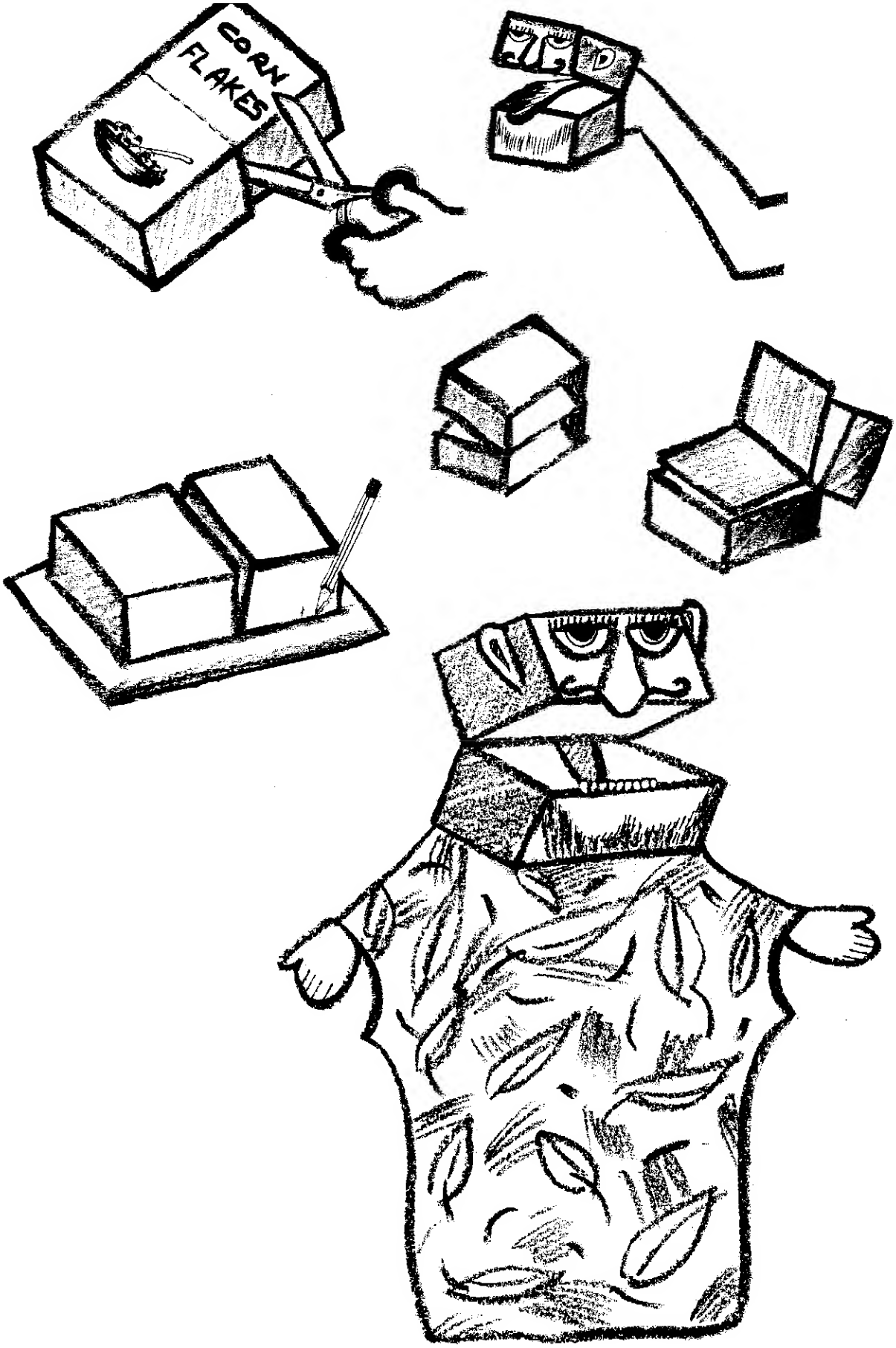
CORN
FLAKES

खाली डिब्बे से बनी मुंह हिलाने वाली कठपुतली

सामग्री : साबुन का कवर या 555 सिगरेट का खाली डिब्बा, रंग, गोंद, कैंची, कपड़ा आदि।

तरीका : साबुन के खाली कवर या सिगरेट वाले खाली बीस डिब्बों को मेज पर आड़ा रखें। जिस तरह नमूने के चित्रों में दिखाया गया है उसी तरह तीन ओर से, बीचों-बीच हल्का-सा चीरा लगाएं। डिब्बे के न काटे गए निचले आड़े हिस्से पर कोई एक कोरा कागज चिपकाएं। इसके बाद डिब्बे की तह करें। ऐसा करने से हम अपनी चार उंगलियां तथा अंगूठा डिब्बे के दो खानों में डालकर कठपुतली का मुंह हिला पाएंगे। किसी अन्य कागज से कान, नाक, आंख तथा जीभ बनाकर उन्हें कठपुतली पर चिपकाएं।

ऐसी कठपुतली उसके मुंह को खोल तथा बंद कर नचाई जा सकती है। इसे पूरे आकार का पंजों सहित कोई पहनावा पहना दिया जाए तो कठपुतली आकर्षक बन जाएगी। नमूने के चित्र के अनुसार एकमुश्त कपड़े को शरीर का आकार दिया जाए। उसके ऊपरी हिस्से को अंगूठे वाले खाने में हल्के-से चिपका दें। इस कपड़े पर लंबा राक्षस, नाटा सरदार, मोटी तोंद वाला राजा जैसे मजेदार चित्र बनाए जा सकते हैं। ये चित्र उनके अपने शारीरिक आकार को ध्यान में रखकर बनाए जाने चाहिए।

अवधि : 45 से 60 मिनट।

लकड़ी के चम्मच से बनी कठपुतली

सामग्री : पुरानी लकड़ी का चम्मच, कपड़ा, ऊन, रंग, कैंची, सूई-धागा आदि।

तरीका : पुराने लकड़ी के चम्मच के उभरे हुए हिस्से पर जल-रंगों से कठपुतली का चेहरा बनाएं। नमूने के चित्र के अनुसार यदि लड़की का चेहरा बनाया गया हो, तो सिर पर ऊन से बनी चोटी को गोलाकार लगाएं। कठपुतली के गले के इर्द-गिर्द कसकर एक कपड़ा बांध दें। इस कपड़े की लंबाई चम्मच की लंबाई जितनी तथा चौड़ाई पंद्रह सेमी हो। कपड़े पर कोई लेस या गोटा लगाकर उसे सुशोभित करें। इससे कठपुतली की खूबसूरती बढ़ जाएगी। इस तरह एक नई कठपुतली बन जाती है।

चम्मच के डंडी वाले हिस्से को हिलाने-डुलाने से कठपुतली नाच सकती है, बोल सकती है।

सुझाव : अलग-अलग लंबाई और आकार के चम्मचों पर परिवार के सदस्यों के चेहरे रंगें। इनके सहारे बच्चों को परिवार के सदस्यों के आपसी रिश्तों का परिचय दिया जा सकता है।

अवधि : 30 मिनट।

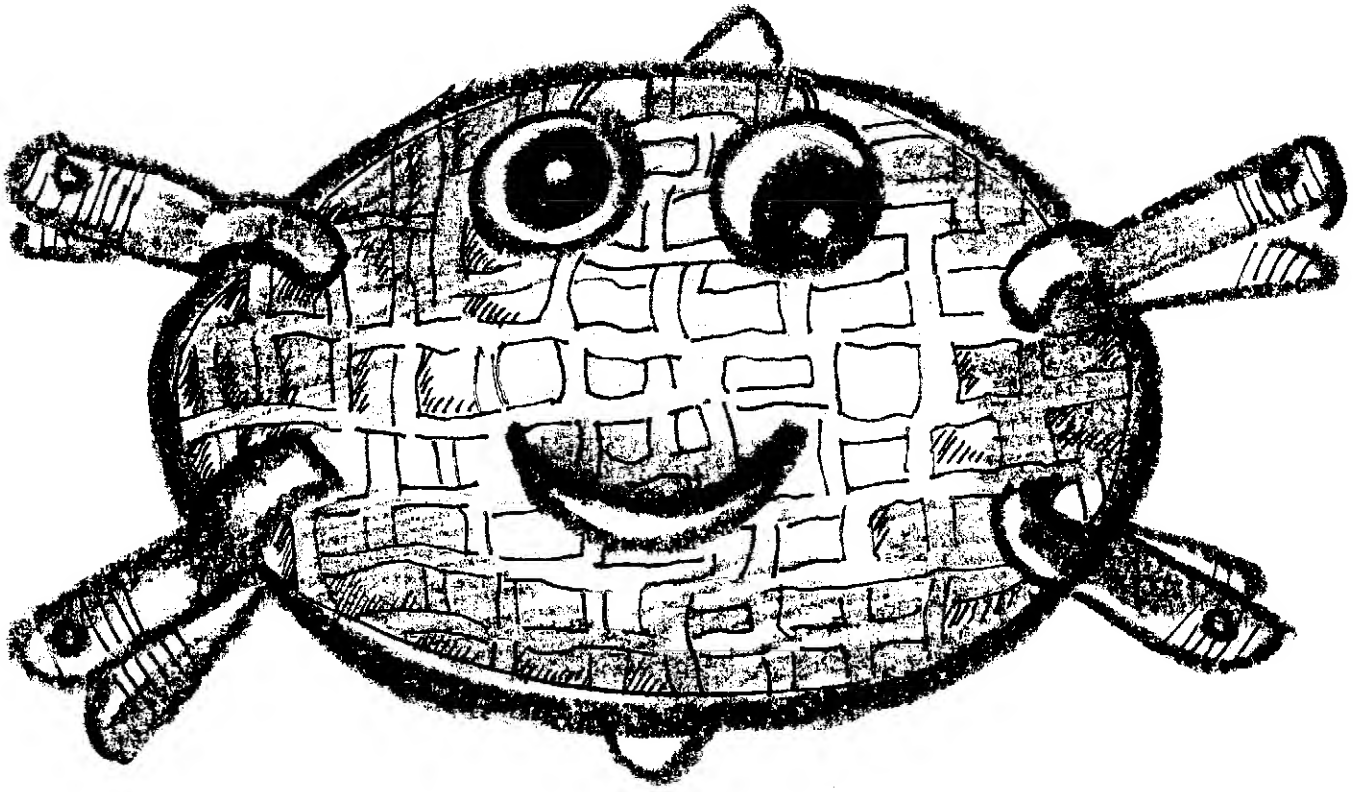

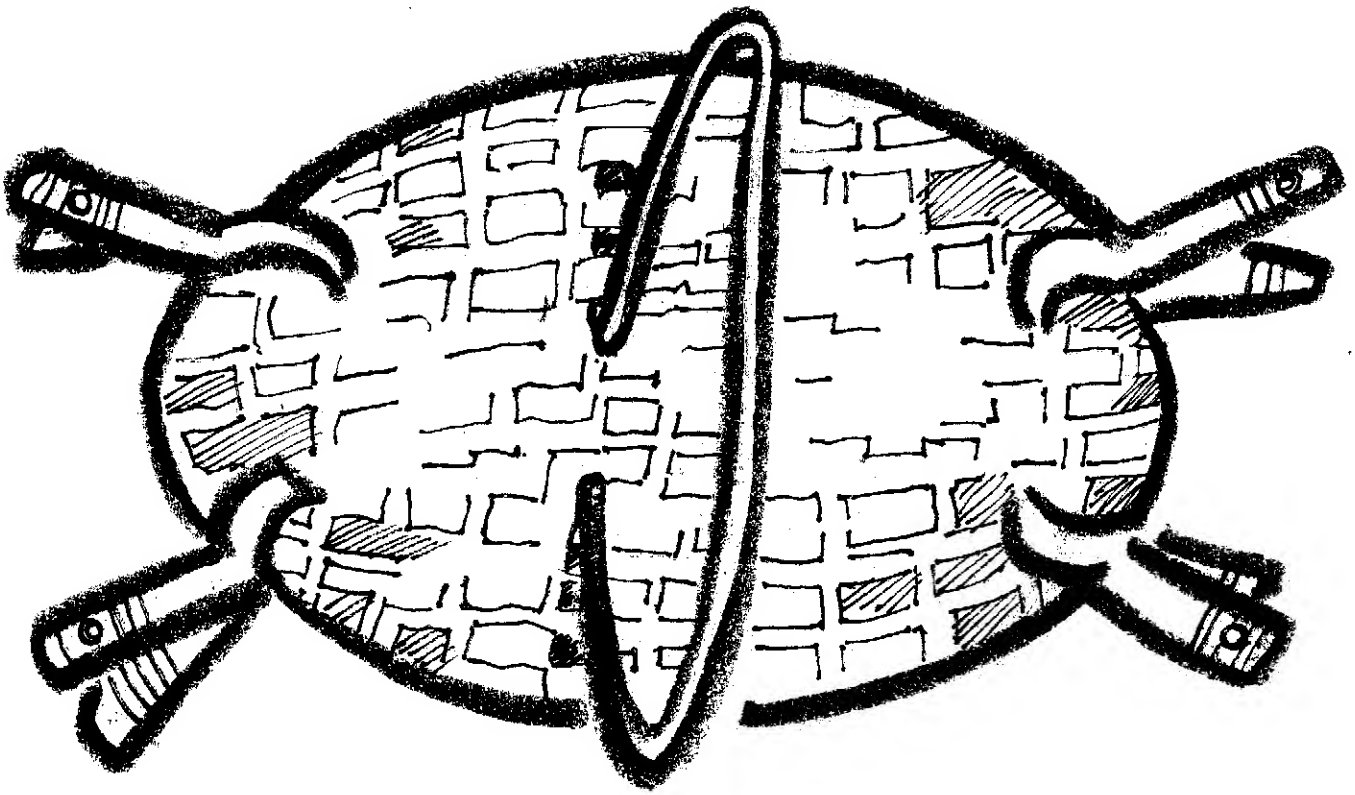

केकड़े का बच्चा

सामग्री : बेंत अथवा बांस से बना फूलदान या ट्रे, कपड़ा टांगने की क्लिप, छोटी गेंद, कपड़ा, गोंद, रंग आदि।

तरीका : बेंत अथवा बांस के पुराने फूलदान या चटाई के छोटे गोल टुकड़े से केकड़ा तथा उसके बच्चे बनाए जा सकते हैं। बांस की टोकड़ी लंबोतरा गोल हो। नमूने वाले चित्र में दर्शाए गए तरीके के अनुसार फूलदान के बाहरी हिस्सों पर छोटी गेंदें लगाएं। इन गेंदों को आंख की पुतली के समान रंगें। बीच में काला और उसके इर्द-गिर्द सफेद रंग हो। गेंद थोड़े ढीले बांधे जाएं ताकि वे हिल-डुल सकें। जब कठपुतली में हलचल होगी, तो उसकी आंखें भी हिलेंगी और इस तरह वह जीवंत बनी रहेगी। लाल कपड़े के होंठ बनाकर कठपुतली के चेहरे पर चिपकाने चाहिए। कपड़ा सुखाने के लिए जिन क्लिपों का उपयोग होता है, उनसे केकड़े के पैर बनाने चाहिए। इस हेतु दोनों ओर दो-दो या तीन-तीन क्लिपें लगाएं। कठपुतली को नचाने हेतु एक सीधी तार कठपुतली से जोड़ी जाए या चित्र में दिखाए गए तरीके के अनुसार तार को गोलाकार मोड़कर फूलदान के पिछले हिस्से में बेंत या बांस में फंसाएं। इस प्रकार केकड़े के चार-पांच बच्चे बनाएं। केकड़े का आकार बच्चों के आकार से बड़ा होना चाहिए। केकड़े के ऊपरी हिस्से पर लाल रंग के दो डंक बनाएं। कपड़े की खोल में रुई ठूंसकर डंक बनाए जा सकते हैं। केकड़े का यह परिवार बच्चों को खूब भाएगा। गिने-चुने चरित्रों की बजाय नए-नए चरित्रों के जरिए कठपुतली के खेल प्रस्तुत किए जाएं। इससे जहां बच्चों को आनंद आएगा, वहीं प्रस्तुतकर्ता के लिए भी यह एक चुनौती होगी।

अवधि : 30 मिनट।

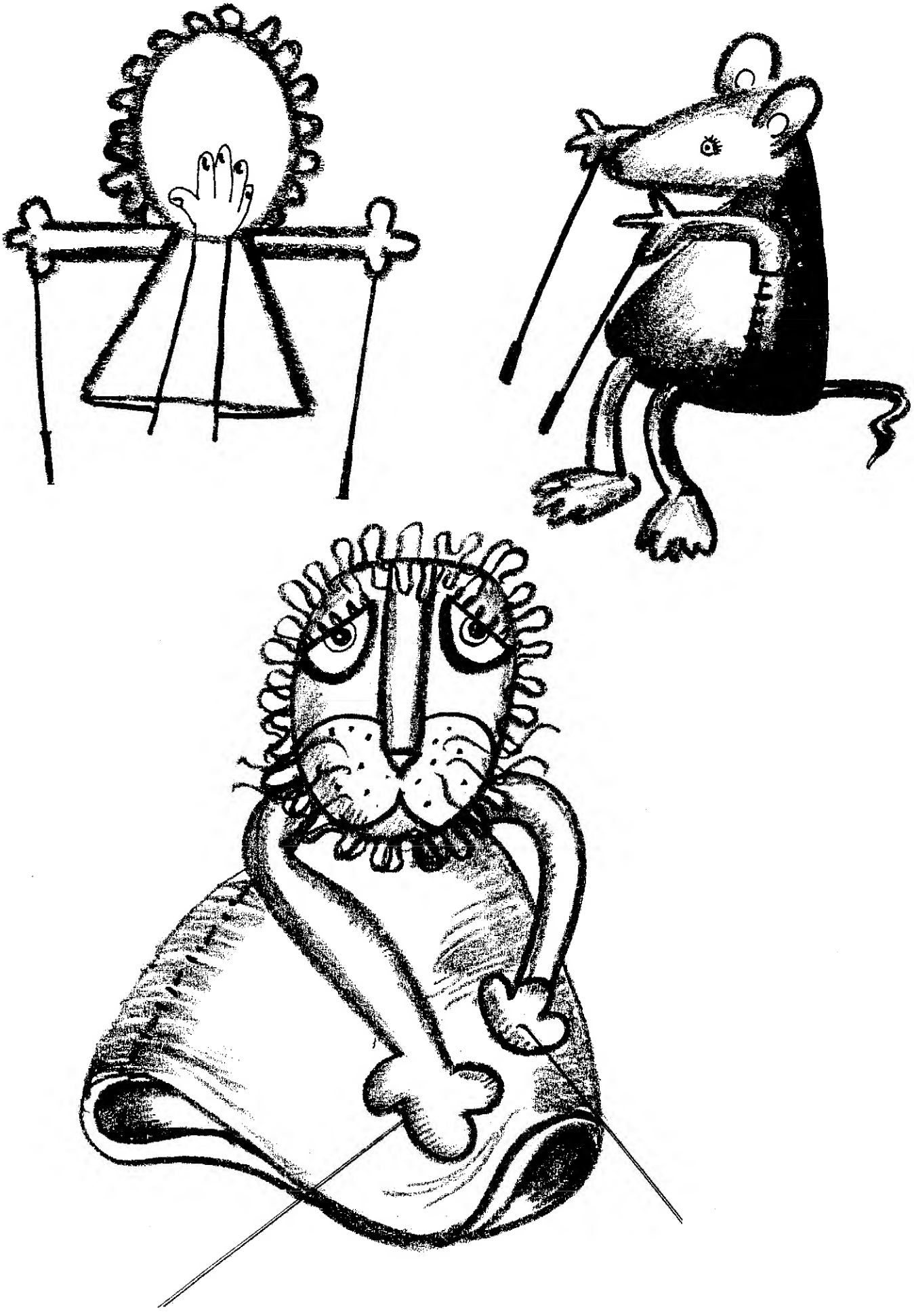

स्पंज से बनी छड़ (शलाका) कठपुतली—शेर तथा चूहा

सामग्री : स्पंज, स्पंज चिपकाने के लिए गोंद, सुतली, रंग, हिलने-डुलने वाली आंखें, तार, छड़ आदि।

तरीका : एक-चौथाई इंच चौड़े स्पंज के टुकड़े को गोलाकार बनाएं। इस गोल आकार पर ही कठपुतली का आकार निर्भर रहेगा।1 गोल बड़ा तो कठपुतली बड़ी, गोल छोटा तो कठपुतली छोटी। शेर बनाने हेतु बड़ा टुकड़ा गोलाकार हो, जबकि चूहे के लिए छोटा। इस गोलाकार टुकड़े में से चौथाई आकार का टुकड़ा काट लें। बचा हुआ तीन-चौथाई हिस्सा स्पंज चिपकाए जाने वाले गोंद से चिपका दें। इस तरह एक कोण का आकार बन जाएगा। इस कोण का ऊपरी नुकीला हिस्सा ऐसे काटें ताकि अपने हाथ का पंजा उस छेद में से बाहर निकल सके। इस तरह तैयार होगा शेर का शरीर।

इसके बाद स्पंज के दो टुकड़े करें। ये टुकड़े आकार में लंबोतरा गोल होने चाहिए। ये दोनों टुकड़े भी एक-दूसरे के साथ पहले ही की तरह चिपकाएं ताकि हमारा पंजा उसमें से बाहर निकल सके। यह हिस्सा शेर का चेहरा कहलाएगा। अब चेहरे तथा धड़ का खुला हिस्सा एक-दूसरे के साथ चिपकाएं। चित्र में दिखाए गए तरीके के अनुसार कठपुतली के मुंह तक हमारा हाथ जाना चाहिए। चेहरे पर कागज से बनी या हिलने-डुलने वाली आंखें चिपकाएं। उभरे गाल दिखाने हेतु गालों पर पुनः स्पंज के गोलाकार टुकड़े चिपकाएं। मूंछों के रूप में नाईलोन धागे उपयोग में लाए जाएं। गर्दन के हिस्से वाले लंबे बालों के लिए सुतली या जूट (पटसन) का उपयोग कर उन्हें चेहरे और गर्दन के इर्द-गिर्द चिपकाया जाए।

शेर के हाथ शेर के शरीर को ध्यान में रखकर बनाने चाहिए। इस हेतु स्पंज की दो मोटी पट्टियों का उपयोग करना चाहिए। स्पंज के ही पंजे बनाकर इन हाथों पर चिपकाए जाएं। हाथ का दूसरा सिरा शेर के कंधे से चिपकाएं। इस तरह शेर की कठपुतली बन जाती है। पीले रंग का स्पंज उपयोग किया गया हो तो बने-बनाए शेर को रंगने की जरूरत नहीं होगी। शेर के दोनों पंजों के भीतर छाते वाली तार चिपकाएं। इन तारों के माध्यम से अपने एक हाथ से शेर के हाथ नचाएं। दूसरे हाथ से शेर का चेहरा हिलाएं। छड़ तथा हाथ कठपुतली का तंत्र इस कठपुतली को नचाते समय उपयोग में लाना चाहिए।

चूहा बनाते समय भी ऊपर दिए गए तरीके को अपनाना चाहिए। ध्यान में रखना होगा कि चूहे का मुंह पीछे चौड़ा और आगे नुकीला होता है। अतः इस आकार के स्पंज का एक टुकड़ा काटा जाए और उसे धड़ के साथ चिपकाया जाए। इसमें स्पंज के दो गोलाकार कान लगाएं। मुंह के खुले हिस्से पर स्पंज का गोलाकार टुकड़ा चिपकाकर उसे बंद कर दें। चूहे के पैर भी बनाने होंगे। पीछे दुम लगानी होगी। उपयोग किए गए स्पंज का रंग राख जैसा हो तो चूहे को रंगना जरूरी नहीं है। स्पंज अपने आप में मुलायम तथा वजन में हल्का होता है जिसके कारण उससे बने चूहे की हलचल सहज और स्वाभाविक होगी। वह जीवंत भी लगेगा।

सुझाव : पंचतंत्र की शेर तथा चूहे वाली कथा प्रस्तुत करने में इन कठपुतलियों का अच्छा उपयोग हो सकता है। इस कथा का अंत बदलकर कथा को एक नया मोड़ दिया जा सकता है। यह परिवर्तन इस प्रकार हो सकता है—चूहा अपने दांतों से जाल काटकर शेर को आजाद करता है। शेर चूहे से सवाल करता है, "तुम्हारे दांत इतने मजबूत कैसे? मैं तो इस जाल को काट ही नहीं पाया।" चूहा जवाब देता है, "महाराज, मैं तंबाकू या गुटके का सेवन नहीं करता। इसी कारण मेरे दांत मजबूत हैं। आप भी इनका सेवन बंद कर दीजिए, तो आपके भी दांत मजबूत हो जाएंगे।"

अवधि : 60 मिनट।

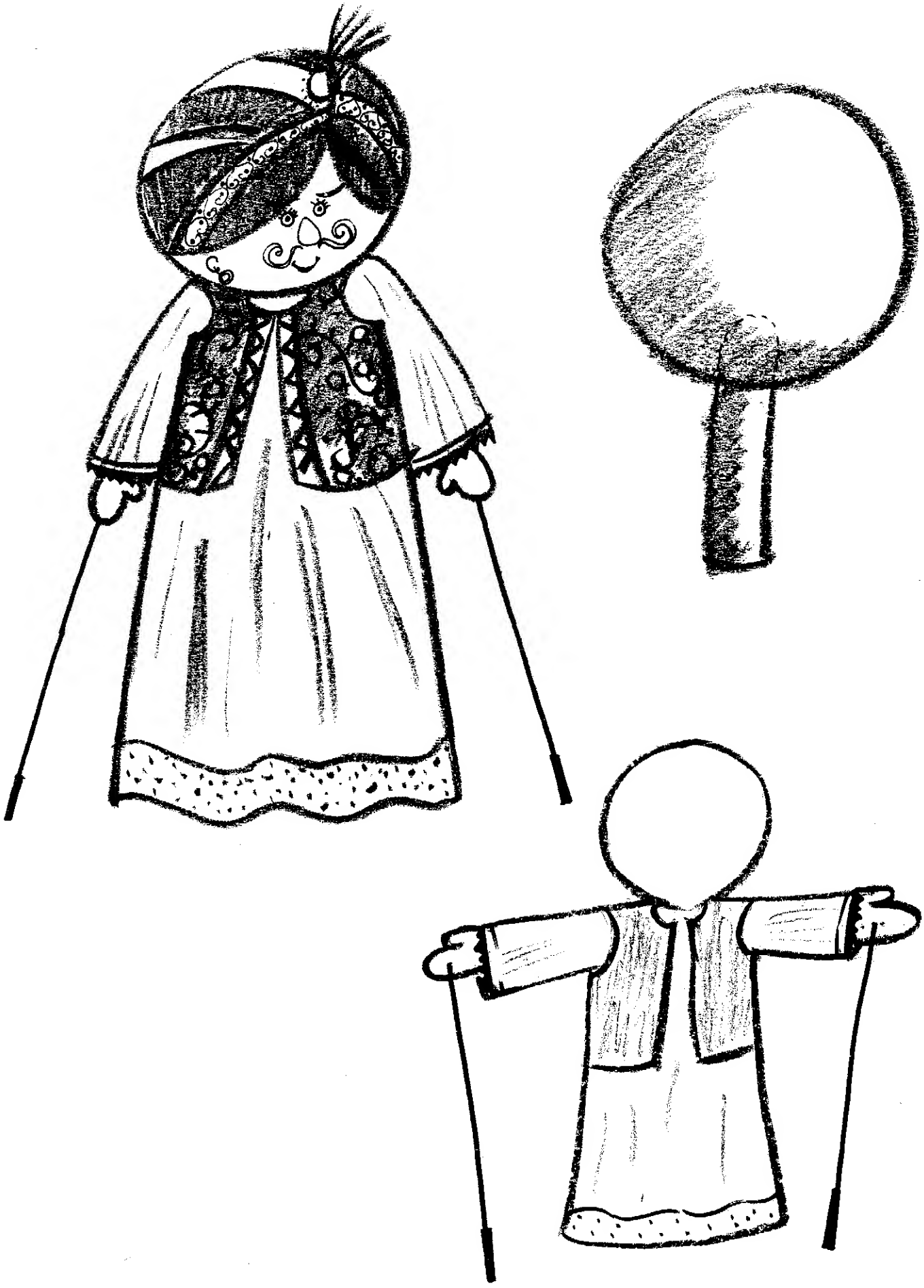

छड़ (शलाका) कठपुतली—महाराजा

सामग्री : प्लास्टिक की गेंद, कपड़ा, सूई-धागा, बटन अथवा हिलने वाली आंखें, छड़, तार, गोंद, कैंची आदि।

तरीका : मध्यम आकार के प्लास्टिक की गेंद में एक छेद करें। छेद में छड़ को कसकर फंसा दें। यदि छड़ 12 इंच लंबी है तो वह 3 इंच भीतर हो और 9 इंच बाहर। गेंद पर कसकर मोजा बांधें। मोजे का खुला हिस्सा गेंद से बाहर डंडे को छूना चाहिए। ऊपर का थोड़ा हिस्सा काट लें और शेष हिस्सा सिलकर समतल कर लें। कठपुतली के इस चेहरे पर नाक, आंखें तथा मूंछें लगाएं। महाराजा का रूप देना हो तो सिर पर फेंटा बांधें। स्त्री का रूप देना हो तो काली ऊन के बाल बनाने चाहिए।

चित्र में दिखाई गई विधि के अनुसार समान आकार के दो कपड़े लिये जाएं। इस पर महाराजा को पहनाए जाने वाले बांह वाले कुरते की रूपरेखा बना लें। भीतरी हिस्से पर सिलाई करें। गला तथा बांहों के सिरे न सिलें। पहनाने हेतु कुरते को सीधा करें। छड़ के इर्द-गिर्द कुरते को सिल दें। दोनों बांहों के सिरों पर छोटे पंजे बनाएं। पंजा सिलने हेतु फेल्ट या मोटा सूती कपड़ा उपयोग में लाएं। पंजों पर छाले वाले दो तार चिपकाएं या सिलें। कुरते में हाथ डालकर छड़ को पकड़ें और कठपुतली का मुंह हिलाएं। अपने दूसरे हाथ से कठपुतली के हाथों वाली छड़ों को पकड़कर कठपुतली का हाथ नचाया जा सकता है। इस प्रकार छड़ (शलाका) कठपुतली बनाएं। कठपुतली को अधिक सजाना हो तो जाकिट, गुलबंद आदि का भी प्रयोग किया जा सकता है।

अवधि : 60 मिनट।

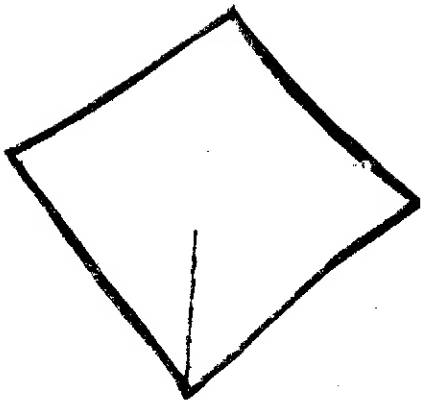

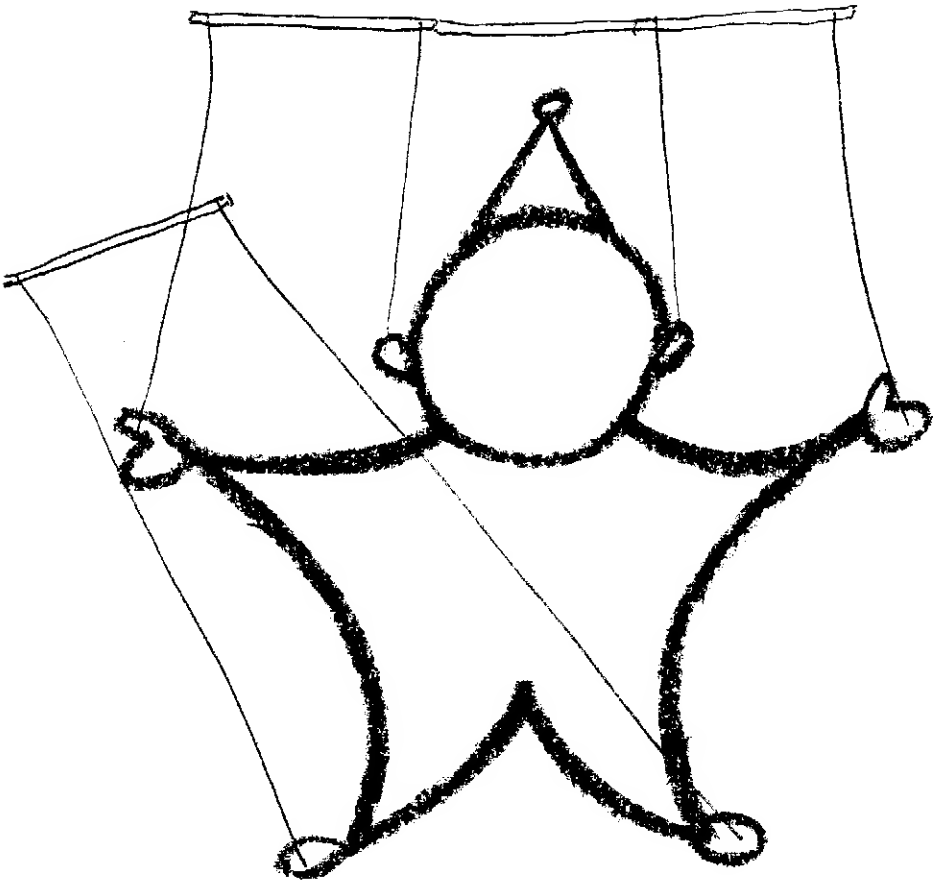

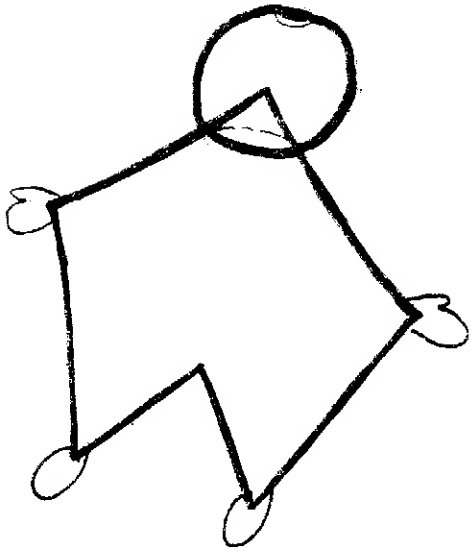

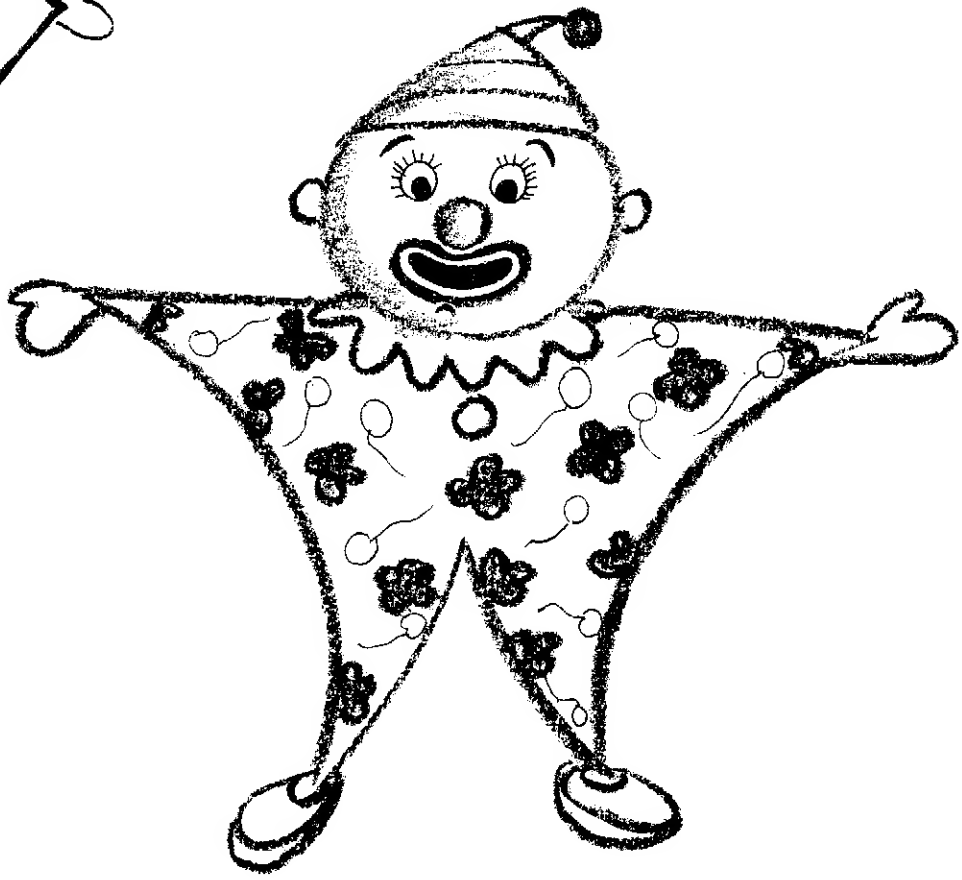

सूत्र या डोर कठपुतली–विदूषक

सामग्री : एक मध्यम आकार वाली प्लास्टिक की गेंद, 24X24 इंच आकार का पतला कपड़ा, मोटा कागज, मोटा धागा, लंबी सूई, एक 20 इंच लंबी और एक 12 इंच लंबी छड़, रंग, गोंद, कैंची आदि।

तरीका : गेंद में आमने-सामने दो छेद करें। ऊपर वाला छेद बड़ा और नीचे वाला छेद छोटा हो।

चित्र में दिखाई गई विधि के अनुसार कपड़े को अपने सामने ऐसे फैलाएं कि उसका एक सिरा उत्तर की ओर और दूसरा दक्षिण दिशा की ओर रहे। विदूषक के दो पैर बनाने हेतु कपड़े के दक्षिणी अर्थात निचले सिरे से कपड़े के मध्य (बिंदु) तक काटें। पूर्वी तथा पश्चिमी सिरों से विदूषक के दो हाथ बनाएं। कपड़े के उत्तरी सिरे को गेंद के बड़े छेद में से भीतर डालकर छोटे छेद में से बाहर निकाल लें। फिर इस सिरे पर गांठ लगा दें या सिरा गोंद से चिपका दें। ऐसा करने से गेंद तथा कपड़ा इकट्ठे रह पाएंगे।

मोटे कागज को काटकर हाथ तथा पैरों के चार पंजे बनाएं। हाथ के पंजे पूर्व तथा पश्चिम के सिरों पर चिपकाएं और पैर के पंजे दक्षिणी सिरे पर। टोपी कपड़ा अथवा कागज की बनाएं। टोपी का ऊपर का सिरा नुकीला हो। निचला हिस्सा गेंद पर चिपकाएं। चेहरा सजाने हेतु रंगीन कपड़ों का उपयोग हो। चेहरे पर हिलने-डुलने वाली आंखें लगाई जाएं। गले तथा पंजों के इर्द-गिर्द रंगीन झालर लगाएं। बाजार में उपलब्ध रंग-बिरंगी गेंद का उपयोग किया जाए तो विदूषक की छवि अधिक आकर्षक बन जाएगी।

ऐसी सूई, जो विदूषक के एक कान में से घुसकर दूसरे कान में से निकल पाए, में मोटा धागा पिरोएं। धागा कम से कम 18 से 20 इंच लंबा हो। छड़ 20 इंच लंबी हो। धागे के दोनों सिरे छड़ पर उन बिंदुओं पर बांधे जाएं, जिनके बीच का अंतर दो कानों के बीच के अंतर के समान हो। छड़ यदि दाहिने हाथ में पकड़ी जाए, तो विदूषक का चेहरा सामने की ओर रहेगा। दो पंजों से दो डोरियां बांध दें। दोनों डोरियों के सिरे छड़ के दोनों सिरों के साथ बांध दें। डोर इतनी लंबी हो ताकि विदूषक के हाथ समकोण की स्थिति में बने रहें। अब 12 इंच लंबी दूसरी छड़ अपने बाएं हाथ में पकड़कर रखें। दाहिने हाथ की छड़ जिस फासले पर पकड़कर रखी गई हो, उसी फासले पर डोर का एक सिरा पैरों के साथ बांधा जाए, दूसरा सिरा छड़ के साथ बांध दिया जाए।

बाएं हाथ की छड़ की मदद से दायां-बायां तकनीक अपनाकर आगे बढ़ें। इस तरह विदूषक के कदम भी आगे बढ़ते जाएंगे। ऐसा करते समय दाहिने हाथ की छड़ भी आगे बढ़ती रहनी चाहिए, वरना विदूषक के कदम तो आगे बढ़ेंगे लेकिन शरीर पीछे ही रहेगा। इस तरीके को अपनाकर और किस प्रकार की हलचल की या कराई जा सकती है, इस बारे में स्वयं विचार करना होगा और तदनुसार कोशिश करनी होगी।

संगीत के ताल पर सूत्र कठपुतली का नृत्य भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

अवधि : 50 मिनट।

छाया कठपुतली

सामग्री : फाइल बनाने हेतु उपयोग में लाया जाने वाला मोटा कागज, बेंत या बांस की लाठी, कागज काटने हेतु कटर तथा धागा।

तरीका : इन कठपुतलियों को बनाने की परंपरागत विधि में बकरी अथवा हिरन की खाल उपयोग में लाई जाती है। एक तो चमड़े के फटने की संभावना नहीं रहती; दूसरे, उसके पारदर्शक होने के कारण उस पर चढ़ाए गए रंग की छाया भी रंगीन दिखाई देती है। किंतु, हम जानते हैं कि वन्य प्राणियों को मारकर उनकी खाल का उपयोग करना सही नहीं है। अतः हमें ऐसे मोटे कागज कागज का उपयोग करना चाहिए जो आसानी से न फट सके। साथ ही कठपुतली ठीक से खड़ी रह पाए, न कि मुड़ जाए। इस दृष्टिकोण से फाइल बोर्ड का उपयोग सही होगा।

सबसे पहले अपनी आवश्यकतानुसार सादे कागज पर मनपसंद चित्र की रूपरेखा खींच ली जाए। कठपुतली को जिस प्रकार नचाना हो उसे ध्यान में रखते हुए कठपुतली के हाथ, पैर और सिर को शरीर से अलग कर लें। काटते समय धड़ तथा इन अंगों की रूपरेखा के बाहर भी थोड़ी जगह छोड़ें ताकि पुनः दोनों हिस्सों को सुविधानुसार बांधा जा सके। इसी सुविधा के कारण शरीर के अंग हिल पाएंगे। नमूने के चित्र में दिखाई गई कठपुतली का केवल हाथ ही हिलना था, अतः केवल एक ही जगह धागे की सहायता से बांधा गया है।

सादे कागज पर बने चित्र को आधार बनाकर एक चित्र मोटे कागज पर बना लें। बेंत या बांस के दो खड़े हिस्से करें। इन हिस्सों में कठपुतली फंसाएं। बेंत या बांस का उपयोग करने के कारण कठपुतली हमेशा खड़ी रहेगी, झुकेगी या मुड़ेगी नहीं। लाठी कठपुतली से लगभग छह इंच लंबी होनी चाहिए ताकि कठपुतली को आसानी से नचाया जा सके। शरीर के अंग को धड़ के साथ जोड़ दें। इस हेतु धड़ पर अंग-विशेष रखें। छेद में मोटा धागा पिरोकर धागे के सिरों को स्वतंत्र रूप से गांठ बांध दें। पिन का भी उपयोग किया जा सकता है। हाथ हिलाने हेतु साइकिल के पहिए का आरा (तीली) सही साधन होगा। चूंकि आरे का एक सिरा समकोण में मुड़ा होता है अतः इन्हें बांधने में आसानी होती है।

इन कठपुतलियों के नचाने हेतु सफेद कपड़े से बना मंच/परदा जरूरी होता है। नाट्यगृह में अंधेरा भी होना चाहिए, क्योंकि छवियां अंधेरे में ही ठीक से दिख पाएंगी। स्कूल के कमरे में इन कठपुतलियों को नचाना हो तो तदनुसार व्यवस्था करनी होगी। इस हेतु मेज के ऊपरी हिस्से पर दो खड़ी लाठियां बांध दें। इनके सहारे धोती जैसा पतला सफेद कपड़ा तानकर फैला दें। परदे के पिछले हिस्से में टेबल-लैम्प जलाकर रखें। सूत्रधार को मेज के नीचे बैठकर या फिर खड़ा होकर कठपुतलियां नचानी चाहिए। इन्हीं नाचती कठपुतलियों की छवि परदे पर दिखाई देगी। कमरे में जितना अधिक अंधेरा होगा, छाया-कठपुतलियों का प्रदर्शन उतना ही आकर्षक होगा। कठपुतलियां नचाते समय अपनी छाया परदे पर नहीं दिखाई देनी चाहिए। सूत्रधार को यह सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए।

कठपुतलियों को सजाने हेतु तथा शरीर के वस्त्र, गहने आदि दिखाने हेतु कठपुतली बनाते समय मोटे कागज पर रेखा, बिंदु, टिकिया, त्रिकोण, चतुष्कोण आदि नक्काशी उकेरनी चाहिए। नक्काशी के छेदों में से रोशनी निकलेगी और परदे पर वस्त्र, गहना आदि दिखाई देगा।

सुझाव : रंगीन छाया दिखानी हो, तो उकेरी गई नक्काशी पर अपनी पसंद का जिलेटीन पेपर चिपका दिया जाए। इस तरह कठपुतली रंग-बिरंगी और आकर्षक दिखाई देगी।

अवधि : 60 मिनट।

कठपुतली नाटिका

चूहे की टोपी

पात्र-परिचय : चूहा, दर्जी, जरदोज (जरी का काम करनेवाला), झब्बेवाला, राजा, दो सिपाही।
अवधि : 8 मिनट।

चूहा : ल... ल... ला... ला...
(मुन्ना बड़ा प्यारा, मम्मी का दुलारा) अरे ऽ ऽ! मेरी दुम में ये क्या फंसा हुआ है? अ ऽ ऽ हा ऽ ऽ, क्या बढ़िया कपड़ा है! इसकी टोपी तो भई बड़ी शानदार बनेगी! (नाचने लगता है।)
ल... ल... ला... ला... *संगीत*
अभी, इसी वक्त जाना होगा दर्जी भाई के पास।
ल... ल... ला... ला...
(दर्जी की दुकान) *संगीत*

दर्जी : कुरते सिल-सिलकर बना हूं मैं दर्जी।
टोपियां सिल-सिलकर बना हूं मैं दर्जी।।
त... त... त.... ता... ता...ता...

चूहा : (स्वगत) दर्जी भैया तो आज बड़े खुश नजर आ रहे हैं। वरना उनकी जबान पर गाना? इन्हीं से अपनी टोपी सिलवा लेते हैं।

दर्जी : कुरते, टोपियां सिल-सिलकर बना हूं मैं दर्जी...

चूहा : दर्जी भैया, दर्जी भैया...

दर्जी : क्या बात है चूहे राजा, क्या चाहिए?

चूहा : इस कपड़े से मेरे लिए एक टोपी बना दीजिए न!

दर्जी : क्या? टोपी? तुम्हारे लिए? और इस कपड़े की?

चूहा : क्यों? क्या हुआ? कितना बढ़िया कपड़ा है। टोपी पहनने के बाद मैं हूबहू राजकुमार दिखुंगा।

दर्जी : लेकिन चूहे राजा...

चूहा : दर्जी भैया, सिल दीजिए न टोपी।

दर्जी : ठीक है। सिल देता हूं, लेकिन एक शर्त है।

चूहा : कैसी शर्त? कहिए तो!

दर्जी : आज के बाद कभी मेरी दुकान पर पैर न रखना। मेरे कपड़ों को कभी न कुतरना। मंजूर?

चूहा : हां-हां, मंजूर... मंजूर।

दर्जी : तो ठीक है, दो कपड़ा।
(नाप लेता है, टोपी सिलता है।) *संगीत*

चूहा : भैया, टोपी एकदम फर्स्ट क्लास, बढ़िया बननी चाहिए।

दर्जी : हां भई! कुरते, टोपियां सिलने में ही तो मेरी सारी उम्र गई है। अं... चलो लो, तुम्हारी टोपी।
(चूहा टोपी पहनकर देखता है।) *संगीत*

चूहा : क्यों दर्जी भैया, कैसा दिख रहा हूं मैं?

दर्जी : अं... अं... अच्छा है। लेकिन... लेकिन मुझे कोई कमी खल रही है।

चूहा : यानी? मैं राजकुमार जैसा नहीं दिख रहा हूं?

दर्जी : अं... अं... हं! ऐसा करो... तुम... तुम... तुम जरदोज के पास चले जाओ। और टोपी पर बढ़िया-सी कशीदाकारी करवा लो।

चूहा : हां, ये हुई न बात! ये चला जरदोज के पास। ल ...ल ...ला... ल... ल... ला...
(जरदोज के पास आता है। वह ऊंघ रहा है।) *संगीत*

चूहा : जरदोज भाई तो ऊंघ रहे हैं। अब क्या करें?
(जरदोज की नाक के भीतर अपनी दुम डालता है।) *संगीत*

जरदोज : आं... कू... कूछी!

चूहा : (पुनः दुम भीतर डालता है।) *संगीत*

जरदोज : आं... कू... कूछी... कौन है? कौन है रे?

चूहा : मैं... मैं हूं चूहा।

जरदोज : तू... तू... तू... फिर आया मेरी दुकान में? जरी कुतरने? (भागादौड़ी) *संगीत*

चूहा : नहीं-नहीं जरदोज भाई, नहीं। मैं यहां तुम्हारा नुकसान करने नहीं आया हूं। मैं कसम खाता हूं। आज के बाद मैं फिर कभी तुम्हारी दुकान में नहीं आऊंगा। तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करूंगा।

जरदोज : सच बोल रहे हो?

चूहा : सच जरदोज भाई, सच। लेकिन तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।

जरदोज : कैसा काम? बोल, जल्दी बोल।

चूहा : मेरी इस टोपी पर कशीदा काढ़ दीजिए। मैं इसे पहनूंगा तो बिल्कुल राजकुमार दिखुंगा।

जरदोज : चल, दे टोपी, दे।
(टोपी पर कशीदा काढ़कर सजाता है।) *संगीत*

चूहा : टोपी पर ऐसा कशीदा काढ़िए, ऐसा कशीदा काढ़िए, ऐसा कशीदा काढ़िए...

जरदोज : हां, तू ही बता, कैसा?

चूहा : इसे ऐसा सजाइए... कि ऐसी सजावट दुनिया में किसी टोपी पर न हो।

जरदोज : अच्छा-अच्छा, ठीक है, करता हूं कोशिश।

चूहा : ल... ल... ल... ला...!

जरदोज : *संगीत* ये लो अपनी टोपी। बड़े राजकुमार बनने जा रहे हैं!
(चूहा टोपी पहनता है।)

चूहा : क्यों? मैं राजकुमार नहीं दिखता?

जरदोज : यह बात नहीं है चूहे राजा। तुम ऐसा करो, इस टोपी पर झब्बा लगवा लो। फिर अच्छे दिखोगे।

चूहा : ठीक है जरदोज भाई। झालर लगवा लेता हूं। चलता हूं... ल... ल... ला... ला...!
(झब्बेवाले के पास आता है।) *संगीत*

चूहा : झब्बेवाले भाई, ओ झब्बेवाले भाई! बताओ तो, मैं कैसा दिख रहा हूं?

झब्बावाला : वाह भई वाह! आज तो सिर पर टोपी भी है। क्या बात है?

चूहा : बात ऐसी है झालरवाले भाई—मेरी टोपी पर एक बढ़िया-सा, छोटा-सा, रंगीन झब्बा लगा दो। भाई, आप मेरा इतना काम कर दोगे, तो फिर मैं आपको कभी नहीं सताऊंगा।

झब्बावाला : हां-हां, अभी लगा देता हूं! तुम क्या राजकुमार बनकर राजमहल में जाओगे?

चूहा : बिल्कुल जाऊंगा! ऐसी टोपी तो राजा के पास भी नहीं होगी।

झब्बावाला : कहीं पागल तो नहीं हो गया तू?... ले चल ले, तेरी टोपी।

चूहा : थैंक यू झब्बेवाले-झालरवाले भाई, थैंक यू!

ल... ल... ला... ला...! *संगीत*

(राजा तथा सिपाही चले जा रहे हैं। सिपाही जनता को आगाह करता चल रहा है। चूहा गाना गाते हुए आता है।)

राजा : अरे वाह! इस चूहे की टोपी तो बड़ी सुंदर है। ऐसी टोपी तो मेरे पास भी नहीं है।

चूहा : मुन्ना बड़ा प्यारा, मम्मी का दुलारा।

राजा : ऐ चूहे, तेरी टोपी तो बहुत खूबसूरत है। जरा दिखाना तो! मैं इसे पहनकर देखना चाहता हूं।

चूहा : लीजिए महाराज।

(टोपी सौंपता है। राजा उसे पहनता है।)

राजा : वाह! मन को बड़ा अच्छा लग रहा है यह टोपी पहनकर।

(इधर-उधर नाचता फिरता है।) *संगीत*

चूहा : महाराज, काफी हो गया, अब मेरी टोपी मुझे लौटा दीजिए।

राजा : टोपी? तुम्हारी टोपी? चलो-चलो, रास्ता नापो! अब ये टोपी मेरी हो चुकी है।

चूहा : नहीं महाराज, टोपी मेरी है। इसे मुझे लौटा दीजिए।

राजा : कहा न, रास्ता नापो! अब यह टोपी तुझे नहीं मिलेगी।

(चूहा कहीं से ढोलक लेकर आता है।) *संगीत*

चूहा : ढुम् ढुम् ढुमाक्, ढुम् ढुम् ढुमाक्
राजा भिखारी, मेरी टोपी हथिया ली
ढुम् ढुम् ढुमाक्, ढुम् ढुम् ढुमाक्

राजा : ओफ्फोह! ये ले तेरी टोपी और खबरदार, जो मुझे भिखारी कहा!

(चूहा टोपी उठा लेता है।) *संगीत*

चूहा : ढुम् ढुम् ढुमाक्, ढुम् ढुम् ढुमाक्
राजा है दब्बू, मेरी टोपी लौटा दी
ढुम् ढुम् ढुमाक्, ढुम् ढुम् ढुमाक्

(नाचने लगता है।) *संगीत*

गंदा मन्नू

पात्र-परिचय : मां, मन्नू, मुर्गा, बिल्ली, खरगोश, खरगोश का बच्चा, बतख, सूअर।
अवधि : 8 से 10 मिनट।

(मन्नू का घर। मन्नू उबासी लेते हुए मंच पर प्रवेश करता है। मां अपने काम में व्यस्त है।)

मां : अरे वाह, मन्नू! उठो बेटे। शाबाश! अब फटाफट हाथ-मुंह धो लो। देखो तो, सूरज कितना चढ़ चुका है। अब तो दोपहर के खाने का समय करीब आ रहा है। ये कोई समय हुआ उठने का?

मन्नू : (जम्हाई लेते हुए) ओ ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ

मां : अभी भी तेरी नींद पूरी नहीं हुई? (आश्चर्यचकित है) कैसा लड़का है रे तू?

मन्नू : बहुत नींद आ रही है न मां! (जम्हाई लेता है।)

मां : मुंह धो ले तो नींद चली जाएगी। ठंडे पाने से नहा लेगा तो फिर तुझे बड़ी ताजगी महसूस होगी। (मां भीतर चली जाती है।)

मन्नू : ना ऽ ऽ ऽ, मैं कुछ नहीं करूंगा—न मुंह धोऊंगा न नहाऊंगा। सच में मेरी कुछ समझ में नहीं आता रोज सुबह-सुबह उठकर यह सब क्यों करना होता है? मुंह धोओ, दांत घिसो, दूध पीओ, नहाओ, साफ-सुथरे कपड़े पहनो! छी ऽ ऽ ऽ, यह सब करना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। बस, एक ही बात अच्छी लगती है—खेलो-कूदो, घूमो-फिरो...।
ढं ऽ टँ ऽ ढं ऽ ऽ ऽ (मां आती है।)

मां : मन्नू ऽ ऽ, तू अभी तक यहीं खड़ा है! जा बेटे, जल्दी नहाकर आ जा। फिर मैं तुझे खाना परोसती हूं।

मन्नू : मम्मी, आज नहाने की छुट्टी। मैं थोड़ा घूम-फिरकर आता हूं। (निकल पड़ता है।)

मां : अरे मन्नू, तुमने कल भी नहीं नहाया बेटे। जरा सुनो तो... चला गया। क्या करें इस लड़के का! कभी समय पर नहीं उठेगा। न हाथ-मुंह साफ करेगा, न नहाएगा। बस, हरदम खेल ही खेल। इसे अच्छा सबक सिखाना ही चाहिए। मैं तो हार चुकी इस लड़के से। (निकल पड़ती है।)

(रास्ता या बगीचा)
(मुर्गा चोंच से अपना शरीर साफ कर रहा है। मन्नू का प्रवेश।)

मन्नू : आज मेरे साथ खेलने के लिए कोई भी नहीं है। सभी स्कूल चले गए हैं। किसके साथ खेलूं मैं?

मुर्गा : कुक्कडू-कूं... कुक्कडू-कूं

मन्नू : अरे वाह, ये मुर्गा तो है न! इसी के साथ खेलेंगे। मुर्गा भाई, मुर्गा भाई, चलो, हम दोनों साथ-साथ खेलेंगे।

मुर्गा : (अपनी अकड़ में) तुम हो कौन? और कितने गंदे हो! नहाकर आए हो तुम? बांग देकर मैंने सभी को जगाया है। बड़े लोग अपने-अपने काम पर निकल गए हैं और बच्चे स्कूल गए हैं। मैं अपना शरीर साफ कर रहा हूं। मेरे पास समय नहीं है।

मन्नू : अरे चल यार... खेलते हैं कुछ न कुछ।

मुर्गा : लगता है, अभी-अभी सोकर उठे हो। और सीधे यहीं आ गए। मुंह से बदबू आ रही है। दांत भी साफ नहीं किए अब तक। छी...छी... मैं नहीं खेलूंगा तेरे साथ। (मुर्गा चला जाता है।)

मन्नू : नहीं खेलना है तो मत खेल। मुझे कोई और मिल जाएगा।

(बिल्ली की आवाज। वह मुंह साफ करती हुई आ रही है।)

बिल्ली : म्याऊं ऽ ऽ म्याऊं ऽ ऽ ऽ

मन्नू : बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी, चलो, हम दोनों खेलेंगे।

बिल्ली : (मुंह फेरते हुए) छी... छी... मन्नू, तुम्हारे साथ कौन खेलेगा भला? लगता है, तूने तो अभी दांत भी साफ नहीं किए हैं। और कपड़े भी गंदे हैं। मुझे देखो, चाट-चाटकर हमेशा अपना शरीर साफ रखती हूं। तुम जैसे गंदे लड़के के साथ मैं नहीं खेलूंगी। (म्याऊं ऽ ऽ म्याऊं करती निकल पड़ती है।)

मन्नू : नहीं खेलना है, ना सही! मुझे कोई और मिल जाएगा।

(खरगोश तथा उसका बच्चा कूदते-फुदकते वहां आते हैं।)

मन्नू : खरगोश भाई, खरगोश भाई, मैं भी खेलूं तुम्हारे संग?

खरगोश : छी ऽ ऽ छी ऽ ऽ, ये बदबू कहां से आ रही है? और ये लड़का कौन है? कैसा गंदा-संदा हुलिया है इसका!

खरगोश का बच्चा : मां-मां, ऐसा लगता है कई दिनों से यह लड़का नहाया ही नहीं है।

खरगोश : वो तो इसका हुलिया ही बता रहा है।

खरगोश का बच्चा : मां, लगता है कई दिनों से इसने कपड़े भी नहीं बदले।

खरगोश : हां ऽ ऽ ऽ, शरीर से गंदा, कपड़ों से गंदा!

खरगोश का बच्चा : मैं इसके साथ खेलने जाऊं मां?

खरगोश : खबरदार! ऐसे बच्चों के साथ तो बात भी नहीं करनी चाहिए। चलो, हम दूसरी ओर निकल पड़ते हैं। चलो।

(एक-दूसरे का हाथ थामकर भाग खड़े होते हैं।)

मन्नू : ओहो, क्या हुआ इन सभी को! जाने दो। वो कौन आ रहा है? (बतख आ रहा है।)

बतख : क्वैक्... क्वैक्... क्वैक्...

मन्नू : बतख भाई, बतख भाई, चलो हम खेलें।

बतख : अरे मन्नू, कितना गंदा है तू? अपने आप पर एक नजर डाल जरा। हर तरह गंदगी ही गंदगी। मुझे देख। मैंने अपने शरीर को चाट-पोंछकर कैसे साफ रखा है। तुम तो नहा-धोकर, साफ-सुथरे कपड़े पहनकर खुद को सुंदर बनाए रख सकते हो। फिर ऐसे गंदे क्यों रहते हो? गंदे बच्चों के साथ हम नहीं खेलते।

मन्नू : मत खेलो! (रूठकर बैठ जाता है। इस बीच एक सूअर आता है।)

सूअर : (खुश होकर) मन्नू भैया, मन्नू भैया... अच्छा हुआ तुम मुझे मिल गए।

मन्नू : मन्नू भैया? (गुस्से से) तुम कौन हो मुझे भैया कहनेवाले? मैं क्या तुम्हारा भाई हुआ?

सूअर : (मुस्कराते हुए) भाई नहीं तो और कौन? मिलान कर लो! तुम्हारा मुंह गंदा, मेरा भी गंदा। तुम्हारा शरीर गंदा, मेरा भी गंदा। तुम्हारे शरीर से बदबू आती है, मेरे भी शरीर से आती है। तो फिर हम दोनों भाई-भाई... मन्नू-सूअर भाई-भाई। चल, गंदगी में जाकर लोटेंगे। चलो न, मन्नू भैया।

मन्नू : (शर्म अनुभव करते हुए) गंदगी में लोटूंगा... और मैं... तुम्हारे साथ...! नहीं, नहीं, नहीं! (मन्नू दौड़ता हुआ घर लौट आता है।)

(मन्नू का घर)

मन्नू : मम्मी-मम्मी, जल्दी बाहर आइए। मुझे मुंह साफ करने हैं, शरीर साफ करना है। साफ-सुथरे कपड़े पहनने हैं।

मां : (आश्चर्य से) क्या हुआ बेटे मन्नू?

मन्नू : मम्मी जी, मैं अभी आया। (भीतर चला जाता है।)

मां : गजब हो गया! क्या हुआ इसे अचानक? मुंह धोना है, दांत साफ करने हैं, शरीर साफ करना है, साफ-सुथरे कपड़े पहनने हैं... मन्नू बेटे!...

(मन्नू बढ़िया-सा जैकेट पहनकर बाहर आता है।)

(मुर्गा, बिल्ली, खरगोश, बतख आदि सभी प्राणी इकट्ठे होते हैं। फिर सभी मन्नू के इर्द-गिर्द संगीत के ताल पर नाचने-गाने लगते हैं।)

सुझाव : इस नाटिका में हाथ-कठपुतली, छड़-कठपुतली अथवा छाया-कठपुतली का उपयोग किया जा सकता है।

भोला पंडित

पात्र-परिचय : पंडित जी, बाघ, सियार, पेड़।
अवधि : 10 मिनट।

पंडित जी : (संस्कृत श्लोक का उच्चारण करते हुए पंडित जी जंगल से गुजर रहे हैं।)
नमो देव्यै सरस्वत्यै गणेशाय नमो नमः।
एकदा प्राप्यते विद्या अन्यो विघ्नान पोहति।।
ओम नमो नमः।
आज मन बहुत आनंदित है। कारण भी है। आज कोई छोटी-मोटी नहीं, बल्कि मोटी प्राप्ति ही होनी है। (बाघ की दहाड़) हे प्रभु, मेरा तो अंत समय आ गया। संतोषी मां, कृपा कर मुझ गरीब पर।

बाघ : (पिंजरे में बंद है) पंडित जी, ओ पंडित जी, जरा इस तरफ भी तो देखिए। भलाई का फल भी तो चख जाइए।

पंडित जी : अरे बाप रे, यह बाघ तो मुझे अपने पास बुला रहा है। ओ ऽ हो ऽ हो (भागता है, फिर अचानक रुक जाता है) किंतु मैं क्यों भागा जा रहा हूं भला? होगा बाघ, मैं क्यों डरूं। मैं भी पंडित हूं। सुनूं तो, क्या कह रहा है वह?

बाघ : पंडित जी, पंडित जी, आप डरिए मत। मैं तो शाकाहारी हूं। आदमी का मांस नहीं खाता। जरा इधर तो आइए।

पंडित जी : (पिंजरे के पास जाता है, फिर डरकर पीछे हट जाता है) बाघ महाशय, क्या कहना चाह रहे हो? ये चीख-चिल्लाहट किस कारण?

बाघ : (रोते हुए) देखिए न पंडित जी, हम-तुम जैसे सज्जन लोग दूसरों की भलाई करते हैं, फिर भी फंस जाते हैं। वैसे एक बात कहूं? हमारे साथ जैसा भी व्यवहार हो, हम भलाई करना छोड़ेंगे नहीं।

पंडित जी : सो तो ठीक है, किंतु हुआ क्या?

बाघ : बताता हूं। मैं उस ओर से गुजर रहा था। मैंने अचानक एक हिरन की करुणा भरी आवाज सुनी। मेरा नरम दिल पसीज गया। मैं फौरन हिरन को बचाने के लिए आगे बढ़ा। मैंने शिकारी के चंगुल से तो उसे बचा लिया, लेकिन खुद फंस गया।

पंडित जी : अरेरेरे, हरि ओम् तत् सत्। बाघ महाशय, आप जैसे सज्जन व्यक्ति को बिना कारण दंड भुगतना पड़ा।

बाघ : मैं तो आप जैसे भले आदमी की न जाने कब से राह देख रहा हूं। पंडित जी, मुझे इस पिंजरे से बाहर निकालिए न। बड़ी मेहरबानी होगी।

पंडित जी : मैं तुम्हें मुक्त करूं? सुंदर! फिर मेरा यहीं 'राम नाम सत्य' हो जाएगा।

बाघ : ना-ना पंडित जी। आप क्यों डर रहे हैं? मैंने कहा न आपसे कि मैं शाकाहारी हूं। मैं मनुष्य को नहीं खाता। आपके चरण छूता हूं पंडित जी। आप मुझे बाहर निकालिए। भगवान कसम, मैं आपको नहीं खाऊंगा।

पंडित जी : हरि ओम् तत् सत्। बाघ महाशय, देखो तो तुम्हारी कैसी दुर्दशा हुई है। रुको, मैं अभी पिंजरे का दरवाजा खोलता हूं। (दरवाजा खोलता है।) आइए बाघ महाशय, बाहर आइए।

बाघ : पंडित जी, मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूंगा। प्रणाम पंडित जी, प्रणाम। मुझे प्यास लगी है। चलिए, नदी किनारे चलते हैं।

पंडित जी : वो देखो, वो तो बह रही है नदी। (नदी किनारे आते हैं।) बाघ महाशय, पी लो, जितना मन चाहे पानी पी लो। जल ठंडा और मीठा है।

बाघ : (पानी पीता है। मुंह साफ करता है।) सच पंडित जी, पानी ठंडा और मीठा है। देखिए तो, प्यास बुझते ही मैं कैसा तरोताजा हो गया हूं। वैसे पंडित जी, मुझे भूख भी तो जोरों की लगी हुई है। यहां आसपास खाने लायक तो कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा है। केवल आप ही दिख रहे हैं। आप ही को खा लेता हूं।

पंडित जी : लो भाई, लो! ये कैसा न्याय हुआ? हरि ओम्! बाघ महाशय, आप ही ने तो कहा था कि आप शाकाहारी हैं और मानव का मांस नहीं खाते।

बाघ : हां, कहा तो था। लेकिन बुद्धू पंडित जी, जानते नहीं, मांस खाना मेरा धर्म है। मुझे पिंजरे से बाहर आना था, इसलिए मैंने झूठ बोला। अब मुझसे रहा नहीं जा रहा है! (जोर से आवाज कर पंडित जी के शरीर पर छलांग लगाने को होता है।) बाघ दहाड़ता है।

पंडित जी : (सहमे हुए) राम... राम... राम... बाघ महाशय, तुमको पाप लगेगा। एक बार पुनः सोच लो। ये तो घोर अन्याय हुआ। मेरे साथ न्याय होना ही चाहिए, होना ही चाहिए।

बाघ : ठीक है। न्याय होगा। लेकिन फटाफट। मुझे बहुत भूख लगी है। ये पेड़ है, पूछो इसी से।

पंडित जी : हां-हां, पूछता हूं। क्यों नहीं! पेड़ भाई, आपने यहां खड़े-खड़े सब कुछ देखा है। आप ही न्याय कीजिए। मैंने इस बाघ का भला किया है। क्या इसका मुझे यही फल मिलेगा? बाघ मुझे खाए, क्या यह सही है?

पेड़ : पंडित जी, जग की यही रीति है। देखिए तो, मैं दिन-रात इसी तरह खड़ा रहकर मानव-समाज की सेवा करता हूं। उन्हें फल और शीतल छाया देता हूं। इसके बावजूद लोग मुझ पर कुल्हाड़ी चलाते हैं। अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए मेरी जान लेते हैं।

पंडित जी : ऐसा तो नहीं होना चाहिए पेड़ भाई, ऐसा तो नहीं होना चाहिए।

बाघ : सुन लिया न! पंडित जी, सुना न! चलो, हो चुका फैसला। अब मैं आपको खा लेता हूं।

पंडित जी : रुको-रुको। मैं और किसी से बात करता हूं। हरि ओम् तत् सत्... अब किससे पूछें भला?

सियार : (आता है) पंडित जी, बाघ भाई, इतनी ऊंची आवाज में क्या बातें हो रही हैं?

पंडित जी : अच्छा हुआ सियार जी, आप आ गए। अब आप ही निर्णय कीजिए। इस बाघ को मैंने पिंजरे से मुक्त किया और अब ये मुझे ही खाना चाहता है। क्या यह सही है?

बाघ : हां-हां सियार भाई, आप ही बताइए, इसमें क्या गलत हुआ?

सियार : बताता हूं, बताता हूं। बाघ भाई, आप पिंजरे में फंस कैसे गए भला? ऐसा करते हैं, वहीं चलते हैं और समझ-बूझकर फैसला कर लेते हैं।

बाघ : ये रहा पिंजड़ा।

सियार : अरे! इतना छोटा पिंजरा और बाघ भाई, आप इसमें फंसे कैसे? जरा घुसकर तो दिखाइए!

बाघ : यह कौन-सी बड़ी बात है? अभी दिखाता हूं।
(पिंजरे में प्रवेश करते हुए) बस, ऐसे ही मैं पिंजरे में फंसा था।

पंडित जी : हां-हां सियार जी, ऐसे ही, बिल्कुल ऐसे ही।

सियार : अच्छा-अच्छा। यहां तक तो समझ आ गया। लेकिन ये दरवाजा तो खुला है। उस समय यह बंद था क्या?

पंडित जी : बंद था। मैंने खोला, इसी कारण तो बाघ भाई बाहर आ पाए।

सियार : हां, लेकिन कैसे? पंडित जी, जरा दरवाजा बंद करके दिखाइए न।

पंडित जी : (दरवाजा बंद करते हैं।) हरि ओम तत् सत्। देखिए, सियार जी, दरवाजा इस प्रकार से बंद था। मैं सही कह रहा हूं न बाघ भाई!

सियार : पंडित जी, क्या सोच रहे हैं आप? बाघ भाई, अब आप पिंजरे में आराम कीजिए। हो चुका हमारा फैसला। चलिए पंडित जी, निकलते हैं। नमस्ते, नमस्ते... नमस्ते बाघ भाई! चलिए पंडित जी।

(बाघ दहाड़कर सभी को बुलाता है।)

सियार तथा पंडित जी निकल चुके हैं।

सुझाव : इस नाटिका में हाथ कठपुतली, छड़ कठपुतली अथवा छाया कठपुतली का प्रयोग किया जा सकता है।

मैं यशोदा जरूर बनूंगी

(गोद संस्कार)

पात्र-परिचय : पति, पत्नी और दीदी।
अवधि : 10 मिनट।

पति : यशोमति मैया से बोले नंदलाला
राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला

पत्नी : मत गाइए यह गाना!

पति : क्यों?...तुम्हारी आंखों में पानी!

पत्नी : जैसे आप कुछ जानते ही नहीं!

पति : जानता हूं। ऐसे बोल बोलने वाला कोई बालक हमारे घर में नहीं है इसलिए तुम रो रही हो न! लेकिन रोने से क्या होगा?

पत्नी : तुम्हारा क्या... जो बीतती है, मुझ पर ही बीतती है। उलाहने देते हैं लोग मुझे। किसी के घर में कोई शुभ कार्य हो, तो भी मुझे कोई नहीं बुलाता। आप मर्दों को उलाहने नहीं सुनने पड़ते, न ही कोई आपको यह कहकर चिढ़ाता है कि आपको औलाद नहीं है।

पति : मैं तो बार-बार कहता हूं कि हम दीदी की बच्ची को अपने पास रख लेते हैं।

पत्नी : क्या आप नहीं जानते कि जीजा जी की नजर इस मकान पर गड़ी है? दो लड़कियां हैं तो वे तो कहेंगे ही कि किसी एक को अपने पास रख लो। इसी बहाने उनका बोझ हल्का हो जाएगा। लड़के के बारे में कहकर देखिए! कन्नी काट जाएंगे।

पति : फिर हुज्जतबाजी! तुम खुद अपनी मौसेरी बहन के किसी लड़के को अपने पास रखना चाहती हो, मैं जानता हूं। लेकिन ख्याल रखो, इस घर में कोई बच्चा आएगा, तो वह मेरे ही किसी रिश्तेदार का।

पत्नी : हां, ले आओ, मगर देखना कि मैं उसकी परवरिश करती हूं क्या!
(पति गुस्से में निकल पड़ता है।) (दीदी आती है।)

दीदी : क्यों भाभी, ऐसे चेहरा क्यों लटका हुआ है?

पत्नी : वही रोज की चिख-चिख। बच्चा न होने का दोष मुझ पर ही मढ़ा जाता है।

दीदी : तो बच्चा गोद ले लो।

पत्नी : यही तो विवाद का विषय है। किसके रिश्तेदार का बच्चा गोद लें, इनके या मेरे? दोनों ओर के रिश्तेदार हमारे पीछे पड़े हुए हैं।

दीदी : तो फिर किसी अनाथालय का बच्चा गोद ले लो!

पत्नी : कैसी बातें कर रही हैं दीदी? हमें अपने ही किसी रिश्तेदार का बच्चा चाहिए।

दीदी : इससे क्या अंतर पड़ता है भाभी?

पत्नी : खून का रिश्ता ही पक्का रिश्ता होता है।

दीदी : अच्छा, ये तो बताओ, क्या आप दोनों एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हो?

पत्नी : हां, बहुत प्रेम करते हैं। एक-दूसरे के अलावा हमारा है ही कौन? वह कभी मेरा दिल नहीं दुखाते।

दीदी : शादी से पहले आप दोनों एक-दूसरे के रिश्तेदार थे?

पत्नी : नहीं तो!

दीदी : फिर भी एक-दूसरे से इतना प्यार करते हो?

पत्नी : दीदी, पति-पत्नी का रिश्ता ही ऐसा होता है कि वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं।

दीदी : इसका मतलब है कि रिश्ते में से ही प्यार उभरता है। अनाथालय का बच्चा गोद लिया जाए, तो उससे भी रिश्ता बन जाएगा। ऐसे बच्चे से आप प्यार नहीं करोगे?

पत्नी : लेकिन दीदी, अनाथालय के बच्चों का कुछ अता-पता नहीं होता। किसकी संतान है? कैसे पैदा हुई? तरह-तरह के सवाल मन में पैदा होते हैं।

दीदी : भाभी, हर बच्चा स्त्री-पुरुष के संबंधों से ही तो पैदा होता है। क्या यह भी बताना होगा? भाभी, मां-बाप की गलतियों की सजा बच्चे क्यों भुगतें भला?

पत्नी : लेकिन दीदी, ऐसे बच्चे की न कोई जाति होती है, न कोई धर्म। उसे अपना कैसे मानें?

दीदी : भाभी, पैदा हुए बच्चे की क्या जाति और क्या धर्म भला! उसे जाति तथा धर्म की सीमाओं में तो हम बांधते हैं... संस्कारों के जरिए, रीति-रिवाजों के जरिए, उसे अपने ढंग से पढ़ा-लिखाकर।

पत्नी : दीदी, अनाथालय से बच्चा लाओ यानी ढेरों कायदे-कानूनों में फंस जाओ। इससे तो बेहतर है जान-पहचान का कोई बच्चा गोद लेकर उसकी परवरिश की जाए।

दीदी : लेकिन उस बच्चे का भविष्य?

पत्नी : हम संवारेंगे।

दीदी : मान लो कि आपके जीवन में कुछ भला-बुरा हो जाता है तो? वह बच्चा भी अनाथ हो जाएगा।...

पत्नी : लेकिन दीदी, अगर हम संस्था के पास जाएं तो वहां काफी झंझट है। कागज-पत्र... सर्टिफिकेट...

दीदी : भाभी, बच्चे कोई खिलौना नहीं होते। जिस तरह मां-बाप किसी नन्हे बच्चे की छान-बीनकर अपनी पसंद के बच्चे को ही अपनाते हैं उसी तरह अनाथालय भी बच्चों को गोद देते समय उनके होने वाले मां-बाप को अच्छी तरह जांच-परख लेते हैं।

पत्नी : प्यार देने के लिए ही तो हम किसी बच्चे को अपनाएंगे न!

दीदी : सही है! लेकिन अनाथालय भी तो गारंटी चाहता है कि बच्चे के होने वाले मां-बाप बच्चे के हितों की रक्षा कर पाएंगे, उसकी हिफाजत कर पाएंगे।

पत्नी : यह गारंटी किसलिए?

दीदी : इस दुनिया में बच्चों को बेचने-खरीदनेवाले, उनसे गलत काम करवानेवाले, बंधुआ मजदूर बनाकर बच्चों की जिंदगी खराब करनेवाले क्या कम हैं?

पत्नी : हां, सुना तो मैंने भी है।

दीदी : बच्चे ऐसे बदमाशों के हाथ लग जाएं तो उनकी जिंदगी बर्बाद हो जाती है। इसलिए बच्चों की संस्थाओं को जागरूक रहना पड़ता है।

पत्नी : लेकिन दीदी, अपनी खुद की संतान की तो बात ही अलग है न!

दीदी : फिर वही बात! आजकल कई पति-पत्नी केवल एक ही बच्चे को जन्म देना चाहते हैं। दूसरे की जरूरत महसूस होने पर बच्चा गोद ले लेते हैं। अनाथ बच्चे को प्यार देना भी तो एक परम कर्तव्य है न भाभी! वह बच्चा भी तो तुम्हें प्यार देगा। बच्चे की परवरिश में एक अलग आनंद मिलता है। जन्म देने में जो आनंद है बच्चे को छोटे से बड़ा करने में भी वही आनंद है। यह तुम्हें भूलना नहीं चाहिए भाभी!

पत्नी : सच कह रही हो दीदी!

दीदी : भाभी, भैया बाहर जाते समय 'यशोमति मैया से....' गुनगुना रहे थे न!

पत्नी : उनका पसंदीदा गाना है यह।

दीदी : श्रीकृष्ण तो देवकी के पुत्र थे लेकिन उन्हें पाला-पोसा किसने?

पत्नी : मां यशोदा ने।

दीदी : आज भी कोई पूछे कि कृष्ण की माता कौन, तो आंखों के सामने कौन-सी छवि उभरती है?

पत्नी : मां यशोदा की। दीदी, क्या सही मिसाल दी आपने। मैं भले ही देवकी न बन पाई, लेकिन यशोदा जरूर बनकर दिखाऊंगी।

दीदी : जंची न बात!

पत्नी : बच्चों की किसी संस्था या अनाथालय का पता है आपके पास? आप खुद चलेंगी हमारे साथ?

दीदी : हां-हां, क्यों नहीं!

—ज्योति म्हापसेकर

सुझाव : यह नाटिका बिना मंचीय सुविधाओं के प्रस्तुत की जाए, दर्शकों को गोल घेरे में बिठाकर। दर्शक सूत्रधार के जितने करीब होंगे, नाटिका उतनी ही असरदार साबित होगी।